श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान क्षेत्र पूजा आरती चालीसा

-: मंगल आशीर्वाद :-

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108
श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
एवं
समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य
108 श्री ज्ञान सागर जी मुनिराज

-: रचयित्री :-

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी

-: प्रकाशक :-
श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि॰)

कृति : श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान क्षेत्र पूजा आरती चालीसा
कृतिकार : गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी
अष्टम् संस्करण : 10000 प्रतियाँ
प्रकाशन वर्ष : 2025
न्यौछावर राशि : 20.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)

प्राप्ति स्थान :

1. **राकेश जैन, महामंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 9650946696
2. **उमेश जैन, मंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 7982630514
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य प्रदेश)**
   दूरभाष : 9425726867
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 8824620107

Website - www.munisuvratswastidham.com
Instagram - munisuvrat_swastidham
Facebook - munisuvratswastidham
Youtube - swastidhamjahazpur

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर प्रथम 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज प्रथम 'छाणी' (उत्तर)

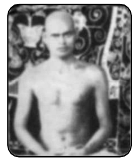

जन्म तिथि	–	कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (सन् 1888)
जन्म स्थान	–	छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम	–	श्री केवलदास जैन
पिता का नाम	–	श्री भागचन्द जैन
माता का नाम	–	श्रीमती माणिक बाई
क्षुल्लक दीक्षा	–	सन् 1922 (वि.सं. 1979), बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा	–	सन् 1923 (वि.सं. 1980), डूंगरपुर (राजस्थान)
आचार्य पद	–	सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण	–	17 मई, 1944 (वि.सं. 2001), सागवाड़ा (राजस्थान)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज (प्रथम पट्टाचार्य)

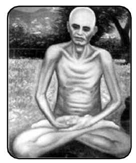

जन्म तिथि	–	कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं.1940(8 नवम्बर सन् 1883)
जन्म स्थान	–	प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम	–	श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम	–	श्री हीरालाल जैन
माता का नाम	–	श्रीमती गेदा बाई
ऐलक दीक्षा	–	सन् 1924 (वि.सं. 1981), इन्दौर (मध्य प्रदेश)
मुनि दीक्षा	–	सन् 1924 (वि.सं. 1981), देवास (म.प्र.)
आचार्य पद	–	सन् 1928 (वि.सं. 1985), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण	–	सन् 1952 (वि.सं. 2009), डालमिया नगर (झारखंड)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विजयसागर जी महाराज (द्वितीय पट्टाचार्य)

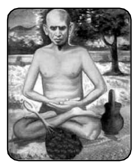

जन्म तिथि	–	माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (सन् 1881)
जन्म स्थान	–	सिरोली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम	–	श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम	–	श्रीमती लक्ष्मी बाई
क्षुल्लक दीक्षा	–	इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा	–	मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा	–	नागौर, राजस्थान (आचार्य श्री सूर्यसागर जी से)
आचार्य पद	–	लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण	–	सन् 1962 (वि.सं. 2019), ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

पूरज पूज्य आचार्य 108 श्री विमलसागर जी महाराज 'भिण्ड' (तृतीय पट्टाचार्य)

जन्म तिथि	–	पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (सन् 1892)
जन्म स्थान	–	मोहिना,जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	श्री किशोरीलाल जैन
पिता का नाम	–	श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम	–	श्रीमती मथुरा देवी
क्षुल्लक दीक्षा	–	सन् 1941 (वि.सं. 1998), झालरापाटन (राजस्थान)
मुनि दीक्षा	–	सन् 1943 (वि.सं. 2000), कोटा (राजस्थान)
आचार्य पद	–	सन् 1973 (वि.सं. 2030), हाड़ोती (राजस्थान)
समाधिमरण	–	सन् 1973 (वि.सं. 2030), सांगोद (राजस्थान)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य आचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज (चतुर्थ पट्टाचार्य)

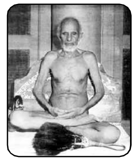

जन्म तिथि	–	आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (22 अक्टूबर, 1917)
जन्म स्थान	–	श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम	–	श्री छिद्दूमल जैन
माता का नाम	–	श्रीमती चिरोंजी देवी
ऐलक दीक्षा	–	सन् 1968 (वि.सं. 2025), रेवाड़ी (हरियाणा)
ऐलक दीक्ष गुरू	–	आचार्य विमलसागर जी महाराज
ऐलक नाम	–	श्री वीरसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	–	सन् 1968 (वि.सं. 2025), गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
आचार्य पद	–	सन् 1973 (वि.सं. 2030), मुरैना (म.प्र.) (आचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण	–	सन् 1994 (वि.सं. 2051), सोनागिरि सिद्धक्षेत्र (म.प्र.)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज (पंचम पट्टाचार्य)

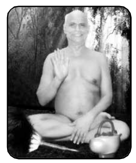

जन्म तिथि	–	अगहन वदी पंचमी, वि.सं. 2006 (10 नवम्बर 1949)
जन्म स्थान	–	बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम	–	श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम	–	श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम	–	श्रीमती सरोज देवी
क्षुल्लक दीक्षा	–	सन् 1972 (वि.सं. 2029)
मुनि दीक्षा	–	सन् 1988 (वि.सं. 2045), सोनागिरी सिद्धक्षेत्र
मुनि दीक्षोपरान्त नाम	–	मुनि श्री 108 सन्मतिसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू	–	आचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद	–	सन् 1989 (वि.सं. 2046), नरवर नगर (म.प्र.)
समाधिमरण	–	सन् 2013 (वि.सं. 2070), दिल्ली

सराकोद्धारक परम पूज्य आचार्य 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज (षष्टम पट्टाचार्य)

जन्म तिथि	–	वैशाख शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 2014 (1 मई, 1957)
जन्म स्थान	–	मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम	–	श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम	–	श्रीमती अशर्फी देवी
ब्रह्मचर्य व्रत	–	सन् 1974 (वि.सं. 2031)
क्षुल्लक दीक्षा	–	सन् 1976 (वि.सं. 2033), सोनागिरि स्द्धिक्षेत्र
क्षु. दीक्षा गुरू	–	आचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम	–	क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	–	सन् 1988 (वि.सं. 2045), सोनागिरि सिद्धक्षेत्र
मुनि दीक्षोपरान्त नाम	–	मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू	–	आचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद	–	सन् 1989 (वि.सं. 2046), सरधना (मेरठ)
आचार्य पद	–	सन् 2013 (वि.सं. 2070), बड़ागाँव (बागपत)

परम पूज्य गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि	–	1-11-1969
जन्म स्थान	–	छिंदवाडा (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	संगीता (गुड़िया)
पिता का नाम	–	श्री मोती लाल जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम	–	श्रीमती पुष्पा रानी जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
लौकिक शिक्षा	–	एम. ए. (संस्कृत)
दीक्षा गुरू	–	आ. श्री 108 विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान	–	24 जनवरी 1996 (इटावा)
दीक्षा नाम	–	आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण

सशक्त हस्ताक्षर

अतिशयकारी प्रतिमा, मनहर मुनिसुव्रत भगवान की
नगर-नगर में चर्चाएँ है, जहाजपुर स्वस्तिधाम की

गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माता जी के नाम में ही स्वस्ति है। स्वस्ति अर्थात् शुभ, मंगल, कल्याण। जो शुभ से भूषित है, मंगल करने वाली है अर्थात् जिनके संसर्ग में रहने से कल्याण ही कल्याण है, ऐसी यथा नाम तथा गुण की धारी गणिनी आर्यिका स्वस्ति भूषण माता जी की लेखनी और वाणी भी कल्याण करने वाली है।

जिनेन्द भक्ति परम्परा से मुक्ति का कारण है, जिस प्रकार मयूर के आगमन से वृक्षों से लिपटे विषधरों के निविड़ बंधन स्वयंमेव ढ़ीले हो जाते है, उसी प्रकार जिनेन्द्र भगवान की भक्ति से आत्मा को कसने वाले पाप और असाता वेदनीय कर्म रूपी बंध स्वयंमेव ही निर्बन्ध होने लगते है। और जब पूज्यनीय माता जी की उत्कृष्ट भावना अपने इष्ट के चरणों में समर्पित करने के भाव हुये तो मन के उद्गार (भावों) को शब्दो रूपी पुष्पो में पिरोकर समर्पित कर दिये तो फलस्वरूप भावों की सरिता के प्रवाह में एक नवीन रचना का जन्म हो गया।

जहाजपुर में अतिशयकारी भगवान मुनिसुव्रतनाथ जी के जहाज मन्दिर की परिकल्पना करने वाली, दिव्य स्वप्न द्रष्टा, परम विदुषी, मृदुभाषी, आशु कवियत्री, गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माता जी की पावन प्रेरणा और सान्निध्य में ये क्षेत्र मात्र 5 वर्षो में जमीन खरीदने से लेकर शिखर का कंगूरा लगाने तक में पूरा दिया। एक ऐसी रचना, अद्धभुत परिकल्पना, जैसे सपनो के मन्दिर को भूमि पर उतार दिया हो। और अभी तक का सबसे जल्दी बनने वाला तीर्थ और राजस्थान का सबसे सुन्दर मन्दिर बन गया है।

तीरथ ये मुनिसुव्रतनाथ भगवान का, मुकुट बन गया पूरे राजस्थान का
डंका बज रहा गुरू माँ स्वस्ति नाम का, हर कोई दीवाना स्वस्ति धाम का

परम विदुषी गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माता जी महिला सशक्तिकरण का वह सशक्त हस्ताक्षर है, जिन्होंने अपनी अद्भुत कल्पना शक्ति, कार्य शैली, दृढ़ता वाक्पटुता, मृदुभाषिता एवं लेखक के गुणों से युक्त होकर विद्यमान आर्यिकाओं में अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है।

-ब्र. प्रियंका दीदी

तेजोमयि व्यक्तित्व की धनी आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी

-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
(अध्यक्ष-अ.भा. शास्त्री परिषद्)

यों तो आर्यिकाओं और साध्वियों का बहुत बड़ा समुदाय भारत वसुंधरा पर जिनधर्म की प्रभावना कर रहा है। उनमें विलक्षण प्रज्ञा और प्रतिभा को धारण करने वाली आर्यिका माताओं का विशिष्ट स्थान है। उन्हीं प्रज्ञा और प्रतिभाशीला आर्यिकाओं में गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। इनके जीवन में सरलता, विद्वत्ता, श्रद्धा और विवेक का अनूठा संयोग है। वह मधुर भाषिणी, शांतचेता और सदा प्रसन्न रहने वाली आर्यिका हैं। सदा स्वाध्याय, ध्यान, चिंतन, मनन अध्ययन - अध्यापन में लीन रहती हैं। मैत्री, करुणा, प्रमोद, माध्यस्थ भाव आपके जीवन के कण - कण में समाए हुए हैं। यही कारण है कि आपके जीवन में कटुता और क्रोध कषाय आदि का अभाव है। आप प्रत्येक व्यक्ति में गुण अवलोकन करती हैं और नीरस जीवन में भी सरसता के सम दर्शन करती हैं। आपके पीयूषवर्णी प्रवचनों ने लोगों में आस्था के दीप प्रज्वलित किए हैं। समाज के व्यक्तियों में अंधविश्वास, अंधपरम्परा, रूढ़िवाद, जातिवाद, स्वार्थ, अंधता, ऊंच-नीच विषयक विषमता आदि दुर्गुणों को हटाने में आपकी अहम भूमिका है। नैतिक उत्थान के लिए आप अहर्निश प्रयत्न करती रहती हैं।

आपने दीक्षा धारण करने के बाद भी शिक्षा निरंतर ग्रहण की है, क्योंकि दीक्षा के साथ शिक्षा भी आवश्यक है। बिना शिक्षा के दीक्षा में कोई चमत्कृति पैदा नहीं होती है। ज्ञानाराधना से साधक जीवन में निखार आता है, जो आपश्री के जीवन में आया। ज्ञानाराधन करते हुए आपने शताधिक ग्रंथों का लेखन किया है। भक्ति साहित्य में तो नई चेतना ही लाई है। बहुत विधान और पूजाओं का लेखन कर लाखों लाखों व्यक्तियों को जिनेन्द्र भक्ति में जोड़ा है। समवशरण विधान, सर्वतोभद्र विधान, सिद्धचक्रविधान, कल्पद्रुम विधान आदि महाविधानों के माध्यम से समाज को भक्ति आयोजन करने-कराने की प्रेरणा दी है। वहीं एक दिवसीय विधानों के माध्यम से भक्ति सरोवर में अवगाहन कराया है।

आपकी लेखनी लोकप्रिय है। आप निरंतर सरल, सरस, सुबोध लेखन करती हैं। काव्य क्षेत्र में 'बड़ा ही महत्व है' इस काव्य के माध्यम से तो जन-जन को लुभाने का कार्य किया है। सभी लोगों में माताजी द्वारा बोला और लिखा जाने वाला 'बड़ा ही महत्व है' बड़ा ही प्रिय है। लेखन शैली जितनी प्रभावक है, उतनी ही प्रभावक आपकी प्रवचन शैली है। प्रवचन करते हुए जब आपकी वाणी रूपी सरिता कल-कल छल-छल कर प्रवाहित होती है तो श्रोता गण आनंद से झूम उठते हैं। आपके प्रवचनों में अंत:करण से निकले हुए उद्गार बहुत ही स्फूर्त सहज और स्वाभाविक होते हैं।

आपके जीवन की अनेक विशेषताएं हैं। अलौकिक शिक्षा में विशेष सम्मान प्राप्त कर धार्मिक शिक्षा की गहराइयों में पहुंची, आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुमान को प्राप्त किया। अपने गुरु सिंहरथ प्रवर्तक आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर महाराज की अनुकृति बनकर उन जैसे ही शताधिक रचनाएं कर गौरव बढ़ाया और लोकोत्तर रचना त्रिलोक तीर्थ के समान देवाधिदेव श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर की मनोहर चमत्कारी प्रतिमा को विराजित कर जहाजपुर में जहाजाकृति जैन मंदिर का निर्माण कराया जहाजपुर अतिशय क्षेत्र को त्रिलोक तीर्थ जैसी प्रसिद्धि प्राप्त कराने वाली आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषण अपने आप में महान तेजोमयी व्यक्तित्व हैं। आपने अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में चौबीसी निर्माण, सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि में सहस्रकूट जिनालय, झालरापाटन पाटन का जीर्णोद्धार, मुरैना में गुरुकुल, डोला जी अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार आपके निर्देशन में सम्पन्न हो रहा है एवं केशवराय पाटन प्राचीन तीर्थ का संपूर्ण नवीनीकरण भी आपके निर्देशन में हो रहा हैं।

इनके जीवन में सूर्य की तेजस्विता, चंद्रमा की शीतलता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता, कमल की निर्लिप्तता आकाश की शुभता है। जीवन में सद्गुणों का साम्राज्य है। आपकी आकृति में नम्रता है, प्रकृति में सहजता है और सेवा में नि:स्वार्थता है। ज्ञान की गरिमा और आचार की मधुरिमा से आपका व्यक्तित्व जगमगा रहा है।

हमें गौरव है कि विद्वानों को सतत वात्सल्य प्रदान कर अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद् को अधिवेशन, अनेक संगोष्ठियों की प्रेरणादात्री विभूति संयम साधना के क्षेत्र में अभिनंदनीय व्यक्तित्व की धनी स्वस्ति भूषण माता जी के चरणों में बारंबार वंदामि।

क्षेत्र परिचय

अरावली पर्वत की सुरम्य श्रृंखलाओं के मध्य पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक नगरी जहाजपुर मेवाड़ प्रांत का प्राचीन नगर है। सन् 2013, 23 अप्रैल, मंगलवार, महावीर जयंति, चैत्र का महीना, शुक्लपक्ष, तेरस तिथि के शुभ दिन अपराजिता देवी के साथ भगवान श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भूगर्भ से प्रगट हुए। यह दिन इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में लिख गया है। जहाजपुर वासियों की वे हजारों आंखें धन्य हो गई जिन लोगों ने प्रभु को भूमि से प्रगट होते हुए देखा था। सभी लोग एक ही बात कह रहे थे कि आर्यिका रत्न श्री स्वस्ति भूषण माता जी ने अष्टान्हिका महापर्व में सिद्धचक महामंडल विधान के मध्य प्रवचन में अनेकों बार बोला था कि यहां और मूर्तियां निकलेगी और नया क्षेत्र बनेगा। उनके द्वारा कही बात आज पूर्णतः सत्य हो गई।

भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ की विश्व विख्यात अति मनोज्ञ महान् अतिशय सम्पन्न चमत्कारी अद्वितीय शासन यक्ष यक्षिणियों और देवों से रक्षित प्रतिमा के भूगर्भ से प्रगट होने के समय प्रतिमा का रंग नीलम जैसा नीला था, मंदिर में आने के पश्चात् हरे रंग की हो गई, कुछ समय बाद स्लेटी रंग की हुई, फिर श्याम वर्ण में परिवर्तित हो गई। इस प्रतिमा के साथ 10 तीर्थंकर प्रतिमा, 4 शासन देवियां भी प्राप्त हुई थीं।

प्रतिमा को निकालते समय प्रतिमा इतनी भारी हो गई कि जे.सी.वी. मशीन से निकालने में भी कठिनाई हो रही थी, पर वहीं प्रतिमा पुराने हाथ ठेले पर विराजित करके मंदिर ले आये, उस समय भगवान इतने हल्के हो गये कि 6-7 लोगों ने प्रतिमा को आसानी से ठेले सहित मंदिर में विराजमान कर दिया। जहाजपुर से 20 कि.मी. दूर देवली नगर में आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी विराजमान थीं, जहाजपुर समाज ने माता जी से चलने का आग्रह किया। पर माता जी ने कहा हमें कही और विहार करना है। पर दूसरे दिन बड़े जोर शोर से आये और कहा माता जी प्रतिमाएं प्रशासन के अधिकार में हैं, आपके चलने से प्रतिमाएं समाज को मिल जायेंगी। माता जी ने विचार किया मुझे ऐसा प्रयास करना चाहिए जिससे प्रतिमाएं मिल जाएं। अतः 29 अप्रैल 2013 को माता जी जहाजपुर वापिस आई, अनेक दिनों तक परिश्रम करने के बाद श्रुत

पंचमी के पावन दिन प्रतिमाएं समाज को प्राप्त हो गई, 21-22-23 जून को महामस्काभिषेक का विशाल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ दशों हजार लोग आये।

माता जी ने टोंक समाज के आग्रह पर वहां वर्षायोग करने का मन बना लिया था, पर जहाजपुर समाज के विशेष आग्रह पर आचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज ने चातुर्मास की अनुमति दे दी, जहाजपुर में आर्यिका श्री का 18 वां वर्षायोग स्थापित होगा ऐसी सूचना से चारो और खुशी की लहर फैल गई, नव तीर्थ श्रृजन हेतु विचार विमर्श होने लगा एवं योजनाएं बनने लगी।

21 जुलाई 2013 वर्षायोग कलश स्थापना में यू.पी., एम.पी., हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान से हजारों श्रावक गण आये थे। रात्रि 8:30 बजे भगवान के नाभि स्थान के आस पास स्पंदन (श्वास लेने जैसा) होने लगा, फिर अनेक माह तक लाखों लोगों ने नाभि स्पंदन का अतिशय देखा एवं कभी कभी माथे पर रेखायें भी दिखती थीं।

जून 2014 की शुभ बेला में स्वस्तिधाम में प्रतिमा विराजमान करने के लिए लाते समय 5 लोगों के द्वारा आसानी से उठ गई। बाद में स्वस्तिधाम में आने के बाद 100 लोगों से भी नहीं उठी, पर जब माता जी आई तब प्रतिमा हल्की हो गई, और वेदिका में आसानी से विराजमान हो गई, ऐसे अतिशय यहां लगातार होते चले जा रहे थे हैं 26 जुलाई 2014 को शनि अमावस्या के अवसर पर हजारों भक्तों ने भगवान का अभिषेक किया उसके पश्चात् मंचीय कार्यक्र म चल रहा था। इसी बीच कोटा वालों द्वारा 1008 दीपक से भगवान की मंगल आरती की गई उसी समय एक दम भगदड़ मच गई उस समय भगवान के नेत्रों से दिव्य रोशनी निकल रही थी और स्वयमेव देवोंकृत अभिषेक हो रहा था, ये अतिशय 4-5 हजार लोगों ने देखा, यह अभिषेक 3 घंटे तक चला एवं दिव्य रोशनी 5 मिनिट तक निकली, अनेक लोगों ने अनुपम दृश्य के फोटो खीच लिए। वे सभी लोग धन्य हुए जिन्होंने ये अतिशय अपनी आंखों से देखें।

इय नवोदित अतिशय क्षेत्र के विकास की यात्रा 12 बीघा जमीन से प्रारंभ हुई, आज क्षेत्र के पास 55 बीघा जमीन है, क्षेत्र पर अनेक कार्य योजनाएं मूर्तरूप लेने लगी। धीरे-धीरे क्षेत्र का प्रचार होने लगा देश के हर भाग से लोगों का तांता लगने लगा। यहां तक की विदेशों से भी लोग आने लगे। पारस चैनल पर 12 जुलाई 2015 से प्रतिदिन अभिषेक का कार्यक्र म प्रसारित होने लगा जिसमें लोग भगवान की छवि देख कर मोहित होने लगे, क्षेत्र पर निर्माण कार्य निरंतर प्रगति करता रहा। स्वस्तिधाम जहाजपुर क्षेत्र ने माताजी को ऐसा जकड़

रखा है कि जब-जब माता जी विहार करती हैं उन्हें लौटकर आना पडता है, यहां रहकर माता जी की सयंम साधना एवं विशुद्धि वृद्धिगत हो रही है। भगवान के चमत्कारों के साथ माता जी के निर्देशन में दूरदर्शी एवं उच्चस्तरीय सोच ने ऐसा इतिहास रचा कि छोटा सा जहाजपुर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति को प्राप्त कर चुका है, माता जी के मधुर प्रवचन एवं असीम वात्सल्य ने समस्त जैन समाज को भक्ति से जोड़ा है, कहीं भी जाओ सभी जगह एक ही चर्चा स्वस्तिधाम तीर्थ की चलती है, जैन समाज का हर व्यक्ति यहां आने को लालायित रहता है। माता जी की भावनानुसार सन् 2020 में 20 वें तीर्थंकर का विशाल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अद्भुत अद्वितीय रहा जिसमें लाखों व्यक्ति ने आकर यहां की भव्यता को निहारा 7 फरवरी 2020 को नवनिर्मित जहाज मंदिर की स्वर्णिम वेदिका पर श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को विराजमान किया गया। उस समय भी भगवान फूल जैसे हल्के हो गये लगा जैसे देवोपुनीत शक्ति काम कर रही हो। आठ दिन तक पारस चैनल पर सीधा प्रसारण हुआ, लोगों ने घर बैठकर कार्यक्रम को सराहा टी.वी. के सामने लोग टकटकी लगाये बैठे रहे। स्वस्तिधाम में यात्री आवास एवं भोजन एवं कैंटीन की उत्तम व्यवस्था है। आचार्य सुमतिसागर यात्री निवास में सर्व सुविधा युक्त 108 कमरे 12 बड़े हॉल है। तथा मांगलिक भवन में सर्वसुविधा युक्त 55 कमरे एवं एक विशाल सभाकक्ष है। संतों के प्रवास हेतु सुन्दर संत निवास है। मंगल स्वस्ति चक्र, चंदनबाला भवन, सुन्दर स्वच्छ सुव्यवथित भोजनशाला में सुस्वादु भोजन परोसा जाता है। रंगीन फव्वारे, विविध रंगों से सुसज्जित विद्युत प्रकाश में नहाया जहाज मंदिर, मानस्तंभ, कलात्मक द्वार, स्वागत करता हुआ कार्यालय, नयन हारी मुख्य्य कुबेर द्वार। आदि सभी निर्माण इस क्षेत्र को अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा ज्यादा आकर्षक एवं आरामदायक बनाता है। यहां पधारे श्रद्धालुगण असीम शांति एवं आनन्द का अनुभव करते हैं, न भूलने वाली स्मृतियों को हृदय में संजोकर ले जाते हैं। जहाज मंदिर में प्रत्येक शनिवार, रविवार को विशेष अभिषेक शांतिधारा होती है। समय समय पर भक्तों द्वारा चालीसा पाठ एवं विधान आयोजित किये जाते हैं। प्रत्येक शनि अमावस्या का विशाल मेला व विशेष अभिषेक महाशांतिधारा एवं अन्य कार्यक्रम होते हैं।

श्री मंगलाष्टक स्तोत्र

अर्हंतो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धीश्वरा,
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्तसुपाठकाः मुनिवराः, रत्नत्रया राधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।1।।

श्री मन्नम्र-सुरा-सुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा,
भास्वत्पादनखेन्दवःप्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरुवः, कुर्वन्तु ते मंगलं।।2।।

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति श्रीनगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः।
धर्म-सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं, चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु ते मंगलं।।3।।

नाभेयादिजिनाः प्रशस्त-वदनाः, ख्याता चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर- प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु लांगलधराः, सप्तोत्तरा विंशतिस्,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि-पुरुषाः, कुर्वन्तु ते मंगलं।।4।।

ये सर्वौषध-ऋद्धियः सुतपसो, वृद्धिंगताः पन्च ये,
ये चाष्टांग महानिमित्त कुशला, श्चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्र्योपि बलिनो, ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः, कुर्वन्तु ते मंगलं।।5।।

ज्योतिर्व्यन्तर भावनामरगृहे, मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बूशाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा, वक्षार रुप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल नगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिन-गृहाः, कुर्वन्तु ते मंगलं।।6।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृत्तिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः, सम्मेदशैलोऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतोः,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु ते मंगलं।।7।।

सर्पो हारलता भवत्यसिलता, सत्पुष्पदामायते।
सम्पद्येत रसायनं विषमपि, प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः, किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः, कुर्वन्तु ते मंगलं।।8।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर-प्रवेश-महिमा, सम्पादितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पंच सततं, कुर्वन्तु ते मंगलं।।9।।

इत्थम् श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं, सौभाग्य-सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु, सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये श्रृणवन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै, धर्मार्थ कामान्विताः,
लक्ष्मीराश्रयते व्यापाय-रहिता, निर्वाण लक्ष्मीरपि।।10।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ व्रत विधि

भगवान मुनिसुव्रतनाथ जी के पंचकल्याणक की किसी भी तिथि से प्रारम्भ करें। बाद में 108 शनिवार एकाशन या उपवास शक्ति अनुसार करें। तेल आदि 1-2 रस का त्याग करें। मुनिसुव्रतनाथ विधान में लिखें एक-एक मंत्र की जाप करें। पूरी भक्ति के साथ 108 व्रत करने हैं। व्रत वाले दिन भगवान की पूजा, विधान अथवा चालीसा करें। (अशुद्धि के समय ना करें।) उद्यापन पर मुनिसुव्रत विधान सामूहिक करें। हो सके तो व्रत पूर्ण होने पर जहाजपुर स्वस्तिधाम में आकर प्रभु के दर्शन एवं विधान करें।

जाप्य - ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः

लघु अभिषेक पाठ

दोहा

मंगल प्रभु का नाम है, मंगलमय गुणगान।
मंगल है अभिषेक जिन, बारम्बार प्रणाम।।

चौपाई

अथ पौर्वाहिणक/मध्यान्हिक/अपराहिणक-देववन्दनायां
पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं
भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्रीपंचमहागुरुभक्ति
कायोत्सर्ग करोम्यहम्।
(9 श्वासोच्छवास पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र का ध्यान करें)

गुण अनंत जिनवर जी धारे, इसीलिये भक्तों को प्यारे।
सौ इंद्रों से वंदित जिनवर, छवि आपकी मनहर-मनहर।।1।।
अनुपम अचल सौख्य के धारी, कर्म कालिमा तुम से हारी।
गुण अनंत ना कह सकते हैं, ना अनुभव में पा सकते हैं।।2।।
शक्तिमान है नाम तुम्हारा, ऋद्धि सिद्धि औ भक्त सहारा।
तीन ज्ञान जनमत ही पाये, सुर नर पा तुम को हर्षाये।।3।।
स्वर्ग में घंटे बजने लागे, देव इन्द्र दर्शन को भागे।
ऐरावत लेकर के आये, पांडुक वन अभिषेक कराये।।4।।
दीक्षा ले तप कर्म खिपाये, केवल ज्ञान का दीप जलाये।
समवशरण रचना सुर कीनी, भक्तों ने भक्ति कर लीनी।।5।।
तीनछत्र सिर पर शोभित थे, जन-जन प्रभु जी पर मोहित थे।
प्रातिहार्य अतिशय की वर्षा, मंगल मय हृदय भी हरषा।।6।।
दिव्यध्वनि में तत्व बताये, निश्चय नय व्यवहार सिखाये।
चिन्मय है चिद्रूप हमारा, ध्रुव, अखंड, शाश्वत शुभ प्यारा।।7।।

शरणागत को शरणा लेते, भवसागर में नाव को खेते।
भूख-प्यास दुख बैर नहीं है, दोष अठारह रहित सही है।।8।।
मुद्रा शान्त नयन सुखकारी, ऐसे प्रभु को धोक हमारी।
कर अभिषेक शांति को पायें, शत-शत चरणों शीश झुकायें।।9।।
ॐ ह्रीं अभिषेक-प्रतिज्ञायां पुष्पांजलिं क्षिपामि।

शेर चाल (दे दी हमें आजादी....)

आवागमन से मुक्त होने, जन्म ले लिया।
रागादि दोष त्याग, वीतराग निज किया।।
पापाचरण से दूर हो, भक्ति को आया हूँ।
साक्षात हैं अरिहंत, दर्श भाव भाया हूँ।1।
पावन हुई है आंख दर्श आपके किये।
पावन हुए हैं हाथ, चरण आपके छुये।।
पावन हुई है बुद्धि, ध्यान आपका किया।
पावन हुई है वाणी, गान मुख से है किया।2।
जीवन भी धन्य हो गया, दर आके तुम्हारे।
ले आया क्षीर सिन्धु से, जल कलश सहारे।।
श्री जिन के सिर पे धारा, शुद्ध नीर की करूँ।
संसार के मिथ्यात्व मोह कर्म को हरूँ।3।

दोहा

तीन जगत के ईश हैं, अभिनन्दन के जोग।
अनंत चतुष्टय के धनी, वंदू मन वच योग।।1।।
विधि यज्ञ प्रारम्भ कर, मूल संघ करतार।
सुकृत हो संसार में, बंदू बारम्बार।।2।।
जिनों में उत्तम आप हैं, ईश्वर औ भगवान।
चंदन सम शीतल प्रभु, बारम्बार प्रणाम।।3।।
भूमि पावन हो गई, कर्म हुए सब दूर।
प्रक्षालन भू का करूँ, सुख पाऊँ भरपूर।।4।।
पाण्डुकशिला पर ''श्री'' लिखे

बीज वर्ण ''श्री'' कार लिख, सब जन मंगल होय।
विघ्न विनाशन जिन प्रभु, शुद्ध पीठिका होय।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री-लेखनं करोमि।

यहाँ पर पीठ स्थापना करें-

रत्नों का शुभ पीठ सजा, पांडुकशिला बनाये।
पीठ करूँ स्थापना, नहवन करूँ जिनराय।।6।।
ॐ ह्रीं स्नपन पीठ स्थापनं करोमि।

पांडुक शिला की पीठ पर, जिनवर को तिष्ठाय।
मेरा प्रभु कल्याण हो, शत्-शत् शीश झुकाय।।7।।
ॐ ह्रीं श्री वर्णे जिनबिम्ब स्थापनम् करोमि।

स्वर्णमयी कलशा चतु, भर करके हम लाये।
चतु कोण स्थापना, वेदी के करवाये।।8।।
ॐ ह्रीं चतुष्कोण कलशा स्थापना करोमि।

भावों में आनंद भर, घंटा दिया बजाय।
जय-जय ध्वनि करके प्रभु, चरणन अर्घ्य चढ़ाय।।9।।
ॐ ह्रीं स्नपनपीठ स्थित-जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि मुकुट धर इन्द्र भी, आया न्हवन के काज।
स्वेद खेद मल रहित जिन, नमता सकल समाज।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर-जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

भक्ति वश धारा करूँ, अमृत मय है धार।
पावन मेरे जिन प्रभु, नमन है बारम्बार।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालवन्तं श्री वृषभादि-महावीरान्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर परम देवं मध्यलोके जम्बू द्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे. ..प्रदेशे...नगरे...मंन्दिर मण्डपे.. वीर निर्वाण संवत्सरे...मासानामुत्तमे...पक्षे. ..तिथौ...वासरे मुन्यार्यिका श्रावक श्राविकाणाम् सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चये।

भव्य मनोरथ पूर्ण हो, हो कर्मों का नाश।
इसीलिये धारा करूँ, त्रिभुवन पति से आश।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्र प्रभु अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति धारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः।

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्झामि अरिहंते सरणं पव्वज्झामि सिद्धे सरणं पव्वज्झामि साहू सरणं पव्वज्झामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्झामि।

ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु।
ॐ नमो अर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः

श्री शान्तिनाथाय शान्ति कराय सर्व पर कृत्च्क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व क्षाम डामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूँ क्ष्रूँ फट् किरीटिं-किरीटिं घातय घातय पर विघ्नान् स्फोटय-स्फोटय सहस्त्र खण्डान् कुरु-कुरु पर मुद्रां छिन्द-छिन्द पर मंत्रान् भिन्द-भिन्द क्षाः क्षः वाः वाः ह्रूँ फट् सर्व शान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्व विघ्न शान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूँ उ ह्रौं सा ह्रः जगदाताप विनाशनाय ह्रीं श्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्ति नाथाय अशोकतरु सत्प्रातिहार्य मण्डिताय अशोकतरु सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय ह्म्ल्व्र्युं बीजाय सर्वोपद्रव शान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुर पुष्प वृष्टि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय भ्म्ल्व्र्युं बीजाय सर्वोपद्रव शान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय म्म्ल्व्र्युं बीजाय सर्वोपद्रव शान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य मण्डिताय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय र्म्ल्व्र्युं बीजाय सर्वोपद्रव शान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासन सत्प्रातिहार्य मण्डिताय सिंहासन सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय घ्म्ल्व्र्युं बीजाय सर्वोपद्रव शान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामण्डल सत्प्रातिहार्य मण्डिताय भामण्डल सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय झ्म्ल्व्र्युं बीजाय सर्वोपद्रव शान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय स्म्ल्व्र्यु बीजाय सर्वोपद्रव शान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय त्रिछत्र सत्प्रातिहार्य मण्डिताय त्रिछत्र सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय ख्म्ल्व्र्युं बीजाय सर्वोपद्रव शान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु-कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्ट सहिताय बीजाष्ट मण्डन मण्डिताय सर्व विघ्न शांन्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु-कुरु।

तव भक्ति प्रसादात्लक्ष्मीपुर राज्यगेह पदभ्रष्टोपद्रव दारिद्रयोद्भवोपद्रव स्वचक्र परचक्रोद्भयोपद्रव प्रचण्ड पवनानल जलोद्भयोपद्रव शाकिनी डाकिनी भूत पिशाच कृतोपद्रव दुर्भिक्षव्यापार वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु। श्री शान्तिरस्तु, शिवमस्तु, जयोस्तु, नित्यमारोग्यमस्तु, सर्वेषां पुष्टिरस्तु, (अस्माकं नाम..) तुष्टिरस्तु, समृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, सुखमस्तु, अभिवृद्धिरस्तु, कुलगोत्र धनधान्य सदास्तु, श्री सद्धर्म बलायुरा-रोग्यैश्वर्याभिवृद्धि रस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्ण कल्याण मंगल रूप मोक्ष पुरुषार्थश्च भवतु।

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोति शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः।।

मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

मुनिसुव्रत प्रभु का आराधन, मुक्ति का साधन बन जाता।
क्षण भंगुर संसारी दुःखमय, कष्टो का जाल भी कट जाता।।
हे मुनिसुव्रत प्रभु मनहारी, तव चरण पूजने आया हूँ।
यह हीरा जनम सुधर जाये, यह अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय शांतिधारा करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक आरती

(तर्ज-वीरा महावीरा स्वामी...)

जिनवर अभिषेक किया है, करके मन हर्ष लिया है,
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा हम सब.......

शुद्ध नीर की धारा हमने, प्रभु के सिर पर छोड़ी ।
नीर के संग में मेरे मन ने, डोर ये तुमसे जोड़ी।। बाबा...
पाया स्पर्श तुम्हारा, पुलकित है मन ये हमारा।
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा हम सब.......

कर्म मैल धोने का साधन, प्रभु की सच्ची भक्ति।
प्रभु अभिषेक औ पूजन करके, करुँ भाव अभिव्यक्ति।। बाबा...
विनती मेरी सुन लेना, कष्टों को प्रभु हर लेना,
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा हम सब.......

अष्ट हैं मंगल प्रातिहार्य भी, शोभा खूब बढ़ायें।
अष्ट द्रव्य हम ले कर आये, चरणन अर्घ्य चढ़ायें।। बाबा...
आठों कर्मो को काटो, संकट के बादल छाँटो,
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा हम सब......

विनय पाठ

विनय पाठ पढ़कर करूँ, पूजा का आरंभ।
पंच परम परमेष्ठी को, वंदन का प्रारम्भ।।1।।
चार कर्म को नष्ट कर, बने आप अरिहंत।
संकट हर मंगल करो, मिले मुक्ति का पंथ।।2।।
सिद्ध शुद्ध परमात्मा, सिद्धालय में वास।
कार्य सिद्ध होवें मेरे, यही प्रभू से आस।।3।।
आचारज उवज्झाय गुरु, सर्व साधु मुनिराज।
ज्ञान ध्यान तप में रहें, नमता सकल समाज।।4।।
चौबीसो जिनराज के, चरण कमल को ध्यायें।
जिनवाणी वरदान दे, शत्-शत शीश झुकायें।।5।।
मंगल मय जिन धर्म है, मंगल मय जिन ज्ञान।
मंगल सम्यग्दर्श को, बारम्बार प्रणाम।।6।।
सौ इन्द्रों से पूज्य हो, तीन लोक के नाथ।
कर्म बंध काटो प्रभू, दे दो अपना साथ।।7।।
जगत सिन्धु में डूबते, दे दो सहारा नाथ।
मात पिता बंधु तुम्हीं, तुम्ही हमारे भ्रात।।8।।
पद पंकज जो पूजता, सकल विघ्न नश जाय।
सच्ची भक्ति कर रहे, सच्चा पथ मिल जाय।।9।।
चिंता तज चिंतन तेरा, करने आया द्वार।
गुण गाकर भक्ति करूँ, दो मुझको आधार।।10।।
स्वारथ के संसार में, मैं हूँ अकेला देव।
छोड़ जगत अब आ गया, करूँ आपकी सेव।।11।।
गणधर ने गुण गाये थे, पूरे कह ना पाये।
मैं अज्ञानी क्या कहूँ, चरणन शीश झुकाये।।12।।
दया दृष्टि मुझ पर करो, दुखिया पर हे नाथ।
नहीं घटेगा आपका, मुझे मिले सुख पाथ।।13।।

व्यथा कहूँ किससे प्रभो, कोई न रिश्तेदार।
लगन लगी अब आपमें, दो जीवन का सार।। 14।।
गतियों में मैं घूमता, किया न कुछ भी काम।
जय जिनवर जिनदेव जी, मिला आपका धाम।।15।।
वीतराग प्रभु मिल गये, छोड़े रागी देव।
वीतरागता पाऊँगा, करूँ आत्म की सेव।।16।।
आकुलता अब छोड़ दी, समता रस परिणाम।
'स्वस्ति' बस वंदन करे, मिले मोक्ष का धाम।।17।।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं,णमो सिद्धाणं,णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः
पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं,
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्धलोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्झामि, अरिहंते शरणं पव्वज्झामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्झामि, साहू शरणं पव्वज्झामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्झामि।
ॐ नमोअर्हते स्वाहा पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मंगल विधान

दोहा

हो अपवित्र तन तो यदि, या करते कोई काम।
परमेष्ठी के ध्यान से, होवे पाप की हान।।1।।
अपराजित यह मंत्र तो, करे विघ्न का नाश।
सब मंगल में प्रथम है, देवे मुक्ति वास।।2।।
अर्हं शब्द को नमन है, परमेष्ठी का ध्यान।
सिद्ध चक्र का बीज है, बारम्बार प्रणाम।।3।।
विघ्न प्रलय सब शान्त हो, भूत प्रेत भग जायें।
विष निर्विष होवे तुरत, जो पूजा को गायें।।4।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाता हूँ।
शुभ मंगल गान करूँ जिनगृह, कल्याण को अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतोगर्भजन्मतपज्ञान निर्वाण पंच-कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाता हूँ।
शुभ मंगल गान करूँ जिनगृह, परमेष्ठी को अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाता हूँ।
शुभ मंगल गान करूँ जिनगृह, जिननाम को अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहत्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाता हूँ।
शुभ मंगल गान करूँ जिनगृह, जिनसूत्र को अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि तत्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

स्वस्ति पाठ

चौपाई

श्री जिनेन्द्र की करें वंदना, तीन लोक के ईश हैं झुकना।
स्याद्वाद जिन धर्म के नायक, हो कल्याण तुम्हीं सब लायक।।1।।

हो त्रिलोकगुरु जिनपुंगव हो, महिमाशाली निज स्थित हो।
आत्मज्योति अद्भुत प्रसन्न हो, हो कल्याण मैं भी धन्य हूँ।।2।।

विमल हो निर्मल ज्ञानी अमृत, पर भावों को करते विस्मृत।
सब वस्तु के आप हो ज्ञायक, हो कल्याण आप हो नायक।।3।।

द्रव्य शुद्धि भावों की शुद्धि, अवलंबन पूजा की वृद्धी।
यह शुभ यज्ञ करूँ मैं प्रारंभ, हो कल्याण सुखों का आरंभ।।4।।

महापुरुष पावन की गुरुता, मैं अल्पज्ञ हूँ मेरी लघुता।
मन में केवल ज्योति जगाऊँ, शुभ भावों से शीश झुकाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिन प्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल

ऋषभ अजित संभव जिन स्वस्ति, अभिनंदन स्वस्ति-स्वस्ति।
सुमति पदम सुपारस जिनवर, चन्द्रप्रभू स्वस्ति-स्वस्ति।।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य स्वस्ति-स्वस्ति।
विमल अनंत धर्म शांति जिन, कुंथु अरह स्वस्ति-स्वस्ति।।
मल्लि मुनि नमि नेमि पार्श्व जिन, महावीरा स्वस्ति-स्वस्ति।
स्वस्ति-स्वस्ति चिंतन में हो, निशदिन हो स्वस्ति-स्वस्ति।।

।।इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

शंभू छंद (तर्ज : भला किसी का...)

केवल ज्ञान मनः पर्यय औ, अवधिज्ञान बुद्धि ऋद्धि।
कोष्ठ बीज संभिन्न श्रोतृपद, दूर स्पर्श श्रवण ऋद्धि।।
दूरास्वादन घ्राण विलोकन, प्रज्ञा प्रत्येक पूर्वी ऋद्धि।
चतुर्दश पूर्वी प्रवादि अष्टांग, जंघा वन्हि श्रेणी ऋद्धि।।1।।

फल जल तंतु पुष्प बीजांकुर, गगन गमन धारी ऋद्धि।
अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, मन वच काया है ऋद्धि।।
काम रूप वशित्व ईशत्व है, है प्राकाम्य अंतर ऋद्धि।
आप्ति प्रतिघात दीप्त तप्त तप, महाउग्र तप घोर ऋद्धि।।2।।

घोर पराक्रम परम घोर तप, ब्रह्मचर्य आमर्ष ऋद्धि।
सर्वौषध आशीर्विष दृष्टि, दृष्टि अविष है क्ष्वेल ऋद्धि।।
विडौषध जल मल क्षीरस्त्रावी, घृतमधु अमृत है ऋद्धि।
है अक्षीण संवास महानस, होती है शुभ ये ऋद्धि।।3।।

मुनिवर जब तप करते रहते, ये तो स्वयं ही आती हैं।
चमत्कार नहिं अतिशय है ये, भक्त के मन को भाती हैं।।
ऐसे परम ऋषिवर मेरे, हम सब का कल्याण करें।
संकट दुख पीड़ायें हर कर, कर्म हमारे शीघ्र हरें।।4।।

ऋद्धि सिद्धि के स्वामी ऋषिवर, ऋद्धि सिद्धि भंडार भरें।
ऋषिवर चरणों नमन करें हम, सुख अमृत के पुष्प झरें।।

।। इति परमर्षि स्वस्ति मंगल-विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

शंभू छंद

रवि केवल ज्ञान का चमक रहा, जिनके अंतर हृदयस्थल में,
तत्वों का ज्ञान करा करके, पहुंचा देती जो शिवपुर में।
दुर्गम संयम पथ पर चलकर, निज आत्म ध्यान में लीन रहे,
श्री देव शास्त्र गुरु के चरणों में, हरपल मेरा ध्यान रहे।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

जग के कीचड़ में फँसकर के, जीवन को वृथा गंवा डाला।
जिनवर वाणी को न पाया, मिथ्या को मैंने था पाला।।
अमृत जल लेकर आया हूँ, यह जन्म मरण तुम दूर करो।
हे देवागम गुरु करुणाकर, मुझ पर ऐसा आशीष धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की चिंता ने हे प्रभुवर, जीवन को चिता बना डाला।
हर पल हर क्षण मैं जलता हूँ, हृदय में उठती है ज्वाला।।
शीतल चंदन लेकर आया, यह भवाताप तुम दूर करो।
हे देवागम गुरु करुणाकर, मुझ पर ऐसा आशीष धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु घटती रहती प्रतिपल, फिर श्वांसों की टूटी माला।
स्थिरता निज में ना पाई, समता को मैंने था टाला।।
अक्षयपुर का मैं वासी बनूँ, भव व्याधि नाथ तुम दूर करो।
हे देवागम गुरु करुणाकर, मुझ पर ऐसा आशीष धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मन की निर्मलता नष्ट हुई, और काम भाव में उलझ गया।
कभी आतम ध्यान भी नहीं किया, संसार चक्र में झुलस गया।।
मैं स्वर्ण पुष्प लेकर आया, तुम सम मुझमें वह शक्ति भरो।
हे देवागम गुरु करुणाकर, मुझ पर ऐसा आशीष धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन में भोजन बहुत किया, पर भूख न मेरी शांत हुई।
जिव्हा लोलुपता बनी रही, जिंदगी मेरी अशांत भई।।
तेरे चरणों में आया हूँ, मम क्षुधा रोग को दूर करो।
हे देवागम गुरु करुणाकर, मुझ पर ऐसा आशीष धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह नेवैद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञान दीप हो गया मद्धिम, अज्ञान अंधेरा छाया है।
तेरा मेरा करता रहता, पर हाथ नहीं कुछ आया है।।
प्रभु ज्ञान दीप की ज्योति से, मम अंधकार तुम दूर करो।
हे देवागम गुरु करुणाकर, मुझ पर ऐसा आशीष धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्म बहुत दुख देते हैं, ये बात मैं सोचा करता था।
पर खोटे कर्मो के द्वारा, पापों की गठरी भरता था।।
ये धूप समर्पित करता हूँ, मम कर्मो को तुम ध्वंस करो।
हे देवागम गुरु करुणाकर, मुझ पर ऐसा आशीष धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं पुण्य पाप का फल पाता, और राग द्वेष में पड़ा रहा।
सुख दुख को साथी बना लिया, संसार चक्र में अड़ा रहा।।
मैं चतुर्गति में भटक रहा, फल मोक्ष गति तुम शीघ्र करो।
हे देवागम गुरु करुणाकर, मुझ पर ऐसा आशीष धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मो के घोर अंधेरे से, घबरा कर चरणों में आया।
अज्ञान मिटा दो हे प्रभुवर, नहिं और कहीं तुमसा पाया।।
भूले भटके भ्रमते जग को, आलोक दिखा तम दूर करो।
हे देवागम गुरु करुणाकर, मुझ पर ऐसा आशीष धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

देव शास्त्र गुरु गुणन को, धरूँ हृदय में धार।
श्रद्धा भक्ति भाव से, नमन करूँ शत बार।।

पद्धरि छन्द

अरिहंत देव हैं महादेव, इनके चरणन की करत सेव।
चहुँ कर्म घातिया किये चूर, सुख दर्शन ज्ञान से हुये पूर।।1।।
छ्यालीस मूलगुण धारी हो, भव्यों के तुम उपकारी हो।
चरणों तल सुर पंकज रचाये, जय जय की ध्वनि से नभ गुंजाये।।2।।
नर देव पशु चरणों में आये, तुम वाणी सुनकर शीश नाये।
सब बैर व्याधि क्षण में नशाये, यह चमत्कार चरणों में पाय।।3।।
शीतल वायु और पुष्प वृष्टि, शुभ-शुभ होती जहाँ आप दृष्टि।
बतलाते हैं तत्वों का सार, भव्यों की नैया करें पार।।4।।
जग में तुम महिमा है महान, हम करते हैं शत्-शत् प्रणाम।
मेरा भी पुण्योदय आया, तुम पूजन कर मन हर्षाया।।5।।
प्रभु के मुख से हुई ओंकार, वह द्वाशांग का बना सार।
कहलाई वह माँ जिनवाणी, भव्यों की है यह कल्याणी।।6।।
निर्ग्रंथ वेश के धारी हैं, वे गुरुवर हमको प्यारे हैं।
वे पंच महाव्रत धारी हैं, भय क्रोध कुटिलता हारी हैं।।7।।
करें मोक्षपुरी की तैयारी, उन्हें मोक्ष सुन्दरी है प्यारी।
रहें ज्ञान ध्यान में लीन सदा, नहीं अशुभ कर्म करते कदा।।8।।
ऐसे मुनिवर के दर्श पाये, चरणों में शत्-शत् शीश नाये।
'स्वस्ति' नित करती प्रभु भक्ति, शीघ्रातिशीघ्र मिल जाये मुक्ति।।9।।

दोहा

वर्णन की नहि शक्ति है, गुण हैं अपरंपार।
श्रद्धा भक्ति भाव से, हो जाये भव पार।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिन शासन जिनदेव और, जिन गुरु शीश नवाय।
वीतराग का पद मिले, मुक्ति सुन्दरी पाय।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पाजलिं क्षिपेत्।।

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना-शंभू छंद

निर्लिप्त निरंजन निराकार, निर्दोष हमारे जिनवर हैं।
हैं शान्त सनातन ध्यान मग्न, ज्योतिर्मय योगी जिनवर हैं।।
मेरा मन विष से भरा हुआ, अमृत मय करने आया हूँ।
नव देवों की भक्ति करने, शुभ थाल सजाकर लाया हूँ।।

दोहा

शक्ति मुझ में हो यदि, आ जाऊँ मैं पास।
नवदेवों की भक्ति से, पाऊँ दिव्य प्रकाश।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहतौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

चाल छंद (तर्ज : ऐ मेरे वतन के...)

मोही कीचड़ में फंसता, कर्मो का आस्रव करता।
मन मैल मेरा धुल जाये, जल ले पूजन को आये।।
नवदेवों को हम ध्यायें, जिनगुण निधियों को पायें।
सौभाग्य हमारा आया, शरणा मैं तेरी आया।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालेभ्यः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से वंदन करते, कर्मो का क्रंदन हरते।
शीतल हो जाऊँ देवा, मैं करूँ आपकी सेवा।।
नवदेवों को हम ध्यायें.........

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

पद में आकुलता होती, सद्बुद्धि को वह खोती।
अक्षत मैं चरण चढ़ाऊँ, अक्षय पद पाने आऊँ।।
नवदेवों को हम ध्यायें, जिनगुण निधियों को पायें।
सौभाग्य हमारा आया, शरणा मैं तेरी आया।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालेभ्यः अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों सम भोग लुभायें, मुझे अपने पास बुलायें।
पुष्पों से पूजा करता, मन काम भाव को हरता।।
नवदेवों को हम ध्यायें.........

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालेभ्यः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन के हम दीवाने, दिन रात फिरें हम खाने।
नैवेद्य वैद्य बन जावे, यह भूख मेरी मिट जावे।।
नवदेवों को हम ध्यायें.........

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन कर्मो से है काला, मन में होवे उजियाला।
दीपक लेकर मैं आया, सुरभित होवे यह काया।।
नवदेवों को हम ध्यायें.........

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालेभ्यः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिकूल जगत यह होवे, प्राणी सुख-दुख में रोवे।
कर्मो की धूप चढ़ाऊँ, कर्मो की धूम उड़ाऊँ।।
नवदेवों को हम ध्यायें.........

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालेभ्यः अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति का फल है अच्छा, आतम ही सबसे सच्चा।
फल से जग फल ना चाहूँ, फल की शुभ भेंट चढ़ाऊँ।।
नवदेवों को हम ध्यायें, जिनगुण निधियों को पायें।
सौभाग्य हमारा आया, शरणा मैं तेरी आया।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालेभ्यः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

साधन से साध्य को पावें, चरणों में अर्घ्य चढ़ावें।
हो जाये सौख्य बसेरा, मुक्ति का मिले सबेरा।।
नवदेवों को हम ध्यायें.........

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालेभ्यः अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा

देता है वरदान, धर्म तो अगणित रूप में।
बारम्बार प्रणाम, भक्ति से शक्ति मिले।।

चौपाई

श्रद्धा और समर्पण लाया, प्रभु पूजा को तेरी आया।
भाव शुद्ध मन पावन कर दो, शुद्ध गुणों से झोली भर दो।।1।।
दुनिया की यह भीषण ज्वाला, करती है आतम को काला।
आप जगत के पालन हारे, नैया मेरी करो किनारे।।3।।
चार घातिया घात के स्वामी, हो अरिहंत आप जगनामी।
समवशरण लगता है प्यारा, होता है यह जग से न्यारा।।4।।
दिव्य ध्वनि अमृत बरसाये, भक्तों का कल्याण कराये।
आठ कर्म को नाश दिया था, मुक्ति में जा वास किया था।।5।।

आत्म ज्ञान है रहित शरीरा, इसीलिये कहते हैं वीरा।
हैं छत्तीस गुणों के धारी, शिष्यों के संग पालनहारी।।6।।
दीक्षा और प्रायश्चित देते, भव्यों को सन्मार्ग दिखाते।
उपाध्याय हैं ज्ञान के सागर, ज्ञान से भरते सबकी गागर।।7।।
सर्व साधु को नमन हमारा, तन मन से संयम को धारा।
है जिन धर्म जगत रखवाला, भवबंधन के तोड़े जाला।।8।।
जिन आगम का अमृत पीना, अध्यातम का आनंद लीना।
हैं जिन चैत्य भी पूज्य हमारे, भक्ति में हमें बनो सहारे।।9।।
चैत्यालय में प्रतिमा शोभे, भक्तों के तन मन को मोहे।
पंच परम ये देव हमारे, भक्त की नैया करो किनारे।।10।।
परमेष्ठी मुक्ति में जायें, हम भी शत-शत शीश नवायें।
शाश्वत धर्म की है बलिहारी, शाश्वत पद के देवन हारी।।11।।

दोहा

नवदेवों की भक्ति से, नव निधियाँ मिल जायें।
नव शक्ति को प्राप्त कर, शाश्वत सुख पा जायें।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालेभ्यः अनर्घ पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शान्ति की छाया मिले, मिले ज्ञान का दान।
अर्पण पुष्पों का करूँ, मिल जायें भगवान।।

।।इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

महा समुच्चय पूजन

चौपाई

अरिहंत सिद्धाचार्य नमन कर, पाठक साधु को शीश झुकाकर।
णमोकार को मन से जपता, सारे पाप शमन मैं करता।।
सामायिक नित आत्म को ध्याकर, पूजा का शुभ भाव बनाकर।
अष्ट द्रव्य मैं लेकर आया, तेरी पूजा कर हर्षाया।।

सहस्त्रनाम को पढ़ हर्षाऊँ, नित आगम का ध्यान मैं ध्याऊँ।
ऐसी शक्ति हृदय में देना, अपने चरणों में रख लेना।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दश धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्योः, पंचमेरु संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, नंदीश्वर द्वीप संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहतौ भव भव वषट् संन्निधिकरणं।

चाल छंद ''तुम सम्मेद शिखर को जइयो''

शुभ भावों का जल लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमाकृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरू दर्श को जाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन पाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।
दश धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन वंदन को लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ भवाताप का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमाकृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरू दर्श को जाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन पाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।
दश धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

शुभ अक्षत धोकर लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ क्षण क्षण कर्म का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर.........

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि0 स्वाहा।

पुष्पों का हार सजाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ कामबाण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर.......

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि0 स्वाहा।

व्यंजन का थाल मैं लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ क्षुधाव्याधि का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर.......

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि0 स्वाहा।

शुभ दीपक लेकर आऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ मोह अंध का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर.......

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि0 स्वाहा।

वन्हि में धूप जराऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ दुष्ट कर्म का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर.......

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि0 स्वाहा।

मैं सरस सभी फल लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ अशुभ भाव का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर......

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं नि0 स्वाहा।

अर्घ्यों की माला लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ चिन्ता द्वेष का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर.........

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

जयमाला

त्रिभंगी छंद

प्रभु ध्यान लगा के, भावना भा के, मंगलमय जीवन करता।
हो चरण में वंदन, जीवन चंदन, भक्ति से मैं भव तरता।।

शंभू छंद (तर्ज : भला किसी का...)

अरिहंत सिद्ध आचार्य गुरू का, हम नित वंदन करते हैं।
उपाध्याय और सर्व साधु का, ध्यान हृदय में धरते हैं।।
देव हो सच्चा शास्त्र हो सच्चा, सच्चे गुरु को ध्याऊँगा।
भरत ऐरावत ढाई द्वीप, तीसों चौबीसी ध्याऊँगा।।1।।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, दर्शन की आशा करता।
होगा जब प्रत्यक्ष दर्श तो, हिय भी हर्ष तभी धरता।।
तीर्थंकर की वाणी ही, जिनवाणी जन कल्याण करे।
भव से पार करा दे उसको, जो इस पर श्रद्धान करे।।2।।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक के, जिन गृह को वंदन करता।
सिद्धालय के सिद्धों को ध्या, उन सम बनूँ आशा करता।।
पाँच मेरु के जिन बिम्बों को, करूँ मैं शत-शत बार नमन्।
नंदीश्वर के बावन जिन ध्या, पाप कर्म का करूँ शमन।।3।।
सोलह कारण भाव हैं सुन्दर, पद तीर्थंकर का देते।
दशलक्षण को धारण करके, मुक्ति सुन्दरी वर लेते।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित का, आराधन हम करते हैं।
हो जाये यदि एक बार तो, चतुर्गति को हरते हैं।।4।।
ऋषभ आदि श्री वीर जिनंदा, भावों से पूजन करता।
सच्ची श्रद्धा सच्ची भक्ति, से ही मानव सुख वरता।।
गौतम गणधर सप्त ऋषि, आदि का ध्यान लगाऊँगा।
विघ्नों का होगा विनाश, औ ऋद्धि सिद्धि को पाऊँगा।।5।।
राम हनु भरतेश बाहुबलि, के पुरुषारथ याद करूँ।
पंच बालयति तीर्थंकर ध्या, मुक्तिपुरी को शीघ्र वरूँ।।
समवशरण में मानस्तम्भ है, सहस्र कूट जिन को बंदूँ।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष पा, कल्याणक से अभिनंदूँ।।6।।

जिस भूमि को तीर्थंकर ने, लेकर जन्म पवित्र किया।
तीर्थ अयोध्या श्रावस्ती, आदि को हमने नमन किया।।
रानीला में प्रगट हुये, श्री आदिनाथ वंदन करता।
चाँदखेड़ी के ऋषभनाथ का, ध्यान हृदय में नित धरता।।7।।
देहरे के चंदा, महावीर जी, सबकी विपदायें हरते।
श्री सम्मेदशिखर चंपापुर, औ सोनागिरि हृदय धरते।।
श्री नेमिनाथ जी मोक्ष गये, गिरनार गिरि को वंदन है।
आदिनाथ कैलाश गिरि से, मिट्टी बन गई चंदन है।।8।।
जितने मुनिवर सिद्ध हुए, निर्वाण भूमि को नमन करूँ।
कर्म नाश कर जग का दुख हर, मैं भी मुक्ति स्वयं वरूँ।।
शुभ भावों से की गई पूजा, शुभ फल को ही देती है।
भक्ति अर्चन पूजन वंदन, संकट सब हर लेती है।।9।।
मोह क्रोध तज पाप छोड़कर, निज का रूप निहारूँगा।
'स्वस्ति' जिन पूजन करके ही, प्रभु सम रूप सम्हारूँगा।।

दोहा

पूजन से प्रभु आपकी, रोम - रोम हर्षाये।
जिन पूजन का फल मिले, स्वर्ग मोक्ष को पाये।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दश धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्योः, पंचमेरु संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, नंदीश्वर द्वीप संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिन शासन जिन देव औ, जिन गुरु शीश नवाय।
वीतराग का पद मिले, मुक्ति सुन्दरी पाय।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनपूजा
स्वस्तिधाम तीर्थ क्षेत्र, जहाजपुर

शंभू छन्द (तर्ज : नाम तिहारा तारण...)

है राग रहित है द्वेष रहित, प्रतिमा तेरी मुस्काती है।
भक्तों के अन्तर्मन में बसे, भक्तों को पास बुलाती है।।
भक्ति उमड़ी मेरे मन में, पूजा करने को आया हूँ।
आओ-आओ मम हृदय बसो, प्रभु तुमको लख हर्षाया हूँ।।
मुनिसुव्रत भगवान की, मूरत है मनहार।
भक्ति श्रद्धा से सदा, नमूँ मैं बारम्बार।।

ॐ ह्रीं भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्आहवाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव वषट्सन्निधिकरणं।

भोगों का प्यासा भटक रहा, भोगों ने मुझे लुभाया है।
ये भोग रोग बन दुख देते, इनसे संसार बढ़ाया है।।
हे मुनिसुव्रत व्रत धारण कर, तुमने मुक्ति को पाया है।
कर्मों का मैल धुले मेरा, यह भक्त चरण जल लाया है।।

ॐ ह्रीं भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मन धन की चिंता करता, आतम चिंता ना कीनी है।
चिंता चिंतन प्रभु बन जाये, शरणा अब तेरी लीनी है।।
मुनिसुव्रत प्रभु की पूजा से, चंदन सम शीतल होना है।
समता का चंदन ले आये, निज धर्म बीज को बोना है।।

ॐ ह्रीं भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य चमक अक्षय तेरी, अक्षय है तेरा ज्ञान ध्यान।
अक्षय सुख में तुम वास करो, अक्षय भावों से मम प्रणाम।।

क्षयवत सुख तज अक्षय पाऊँ, मम कदम धर्म की ओर चलें।
श्री मुनिसुव्रत प्रभु पूजा से, मुरझायें हृदय के कमल खिलें।।

ॐ ह्रीं भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं पाप कषायों में उलझा, मन की शुद्धि ना होती है।
तेरी पूजा तेरी भक्ति, तन मन की शुद्धि करती है।।
मुनिसुव्रत प्रभु के व्रत करके, आतम को शुद्ध बनाना है।
पुष्पों से सुन्दर मेरे प्रभु, बन भंवरा चरण में आना है।।

ॐ ह्रीं भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जीने को भोजन खाना था, भोजन में जीवन लगा दिया।
तप त्याग के फल खाकर तुमने, जीवन को अमृत बना लिया।।
संयम का पालन हो मुझसे, यह शक्ति मांगने आया हूँ।
हे मुनिसुव्रत जिनदेव मेरे, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिन रात प्रकाश में रहते हैं, फिर भी भटके सद्मारग से।
मिथ्यात्व अंधेरा दूर होय, पूजा करते है भावों से।।
सम्यक्त्व का बल्ब जला करके, निज आतम दर्शन करना है।
मुनिसुव्रत प्रभु की भक्ति से, अज्ञान अंधेरा हरना है।।

ॐ ह्रीं भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने कर्मो पर विजय पाई, आतम परमातम बना लिया।
कर्मो के हारे हम बैठे, तेरे चरणों का ध्यान किया।।
पर दोष तजूँ निज दोष लखूँ, दोषों से दूर करो स्वामी।
मैं अष्ट कर्म से रहित होऊँ, है भाव मेरे अंतरयामी।।

ॐ ह्रीं भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अशुभ का फल है पुण्य पाप, कड़वे मीठे फल खाये हैं।
शुभ अशुभ तजूँ हो शुद्ध भाव, श्रद्धा भक्ति से आये हैं।।
आकुलता व्याकुलता छूटे, फल मुक्ति में हमें जाना हैं।
हे शुद्ध निरंजन मुनिसुव्रत, चरणों की छाया पाना हैं।।

ॐ ह्रीं भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत प्रभु का आराधन, मुक्ति का साधन बन जाता।
क्षण भंगुर संसारी दुखमय, कष्टों का जाल भी कट जाता।।
हे मुनिसुव्रत प्रभु मनहारी, तव चरण पूजने आया हूँ।
यह हीरा जन्म सुधर जाये, यह अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

चौपाई

सावन कृष्णा द्वितीया आई, गर्भ धार कर मां हर्षाई।
अष्ट देवी मिल सेवा करती, मां के सारे कष्ट को हरती।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णाद्वितीया गर्भ मंगलमंडिताय भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

थी वैसाख की कृष्णा दशमी, कृष्ण वर्ण की फैली रश्मि।
सुव्रत प्रभु ने जनम है पाया, इन्द्र सुमेरु न्हवन कराया।।

ॐ ह्रीं बैसाखकृष्ण दशम्यां जन्ममंगल मंडिताय भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव भव की याद जो आई, राह आपने तप की पाई।
घोर-घोर तप ध्यान लगाया, आतम ध्यान ही आपको भाया।।

ॐ ह्रीं बैसाखकृष्णा दशम्यां तपोमंगल मंडिताय भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतु घातिया छोड़ के भागे, इन्द्र चरण में आया आगे।
केवल ज्ञान हुआ उजियाला, भक्त फेरते आपकी माला।।

ॐ ह्रीं वैसाखकृष्णा नवम्यां केवलज्ञान प्राप्ताय भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छूटी कर्म की रिश्तेदारी, तुमको थी बस मुक्ति प्यारी।
हम भी यही भावना भायें, इसीलिये आ अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां मोक्षमंगलमंडिताय भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

त्रिभंगी छंद

चारित्र नायक, ज्ञान दायक, आपको नित ध्याते हैं।
मुक्ति प्रदायक, पाप क्षायक, आप सबको भाते हैं।।
मंगल कथा, हरती व्यथा, देती वो सुख भंडार है।
कर्म कटा, शुभ पथ दिखा, कष्टों से बेड़ा पार है।।1।।

शेर चाल (तर्ज- देदी हमें आजादी....)

हे वीतरागी देव तुम्हें, नमस्कार है।
सर्वज्ञ हो जिनदेव तुम्हें, नमस्कार है।।
देते हितोपदेश तुम्हें, नमस्कार है।
कल्याणकारी देव तुम्हें, नमस्कार है।।2।।
भावों की करी शुद्धि तुम्हें, नमस्कार है।
पापों का करते नाश तुम्हें, नमस्कार है।।
भव वन का किया दहन प्रभों, नमस्कार हैं।
आतम का करते ध्यान प्रभो, नमस्कार है।।3।।
अज्ञान अंधेरे में घूमे, राह ना मिली।
जब से किया है दर्श तेरा, मन कली खिली।।
जिन ज्ञान किरण पाने, शरण तेरी आये हैं।
ज्योति जलेगी ज्ञान की, ये भाव भाये हैं।।4।।

हे वीतरागी छवि तेरी, मन को भायी है।
मैं दर्श करूँ बार-बार, मन समायी है।।
मूरत है इतनी प्यारी तो फिर, आप कैसे थे।
भगवान थे भगवान थे, भगवान जैसे थे।।5।।

ना राग है ना द्वेष है, ना ही विकार है।
ना मोह है ना क्रोध है, ना ही विचार है।।
ज्ञानी तुम्ही, ध्यानी तुम्ही, हो परम देवता।
हो शक्तिमान शक्ति दे, हम करें सेवता।।6।।

भूगर्भ से बाहर थे आये, वीरा जयंती।
वो दिन वो घड़ी धन्य हुई, भक्तों की पंक्ति।।
शासन ने तुम्हे साथ में, ले जाने को चाहा।
पर गये नहीं आप, अतिशय है दिखाया।।7।।

ज्यों दर्श करे भक्त आप, मन को मोहते।
जाना वहां से ना वो चाहें, मन को सोहते।।
मूरत तुम्हारी सबको समता, पाठ पढ़ाये।
ना क्रोध करो मान ना ये, सबको बताये।।8।।

हो कृष्ण वर्ण आप पर, आतम तो श्वेत है।
रहते जहां पे आप वो, मुक्ति का खेत है।।
अतिशय किया जहाजपुर, यश तेरा गाते हैं।
भक्ति से श्रद्धा से तुम्हें, प्रभु हम बुलाते हैं।।9।।

कर्मो ने सताया है प्रभु, शरण आया हूँ।
हे नाथ इन्हे दूर करो, भाव भाया हूँ।।
करुणा के सिंधु कुछ तो करुणा, मुझ पे कीजिये।
हो दीन दयाला भी तुम्ही, दया कीजिये।।10।।

शनिग्रह सताये, बाधा आये, शरण में आये।
अभिषेक करे शांतिधारा, शांति को पाये।।
भक्ति करे, विधान करे, जाप भी करें।
दर्शन करें पूजा करें, और ताप को हरे।।11।।

अपराजिता है देवी संग, साथ है आई।
भगवान की सेवा करें, और लगन लगाई।।

भगवान के भक्तों की रक्षा, ये तो करती हैं।
कष्टों को दुखों संकटों को, ये तो हरती हैं।।12।।
जिव्हा सुबह औ शाम गीत, तेरे है गाये।
होंठों पे रहे नाम तेरा, याद नित आये।।
सच्ची है मेरी भक्ति, मन से ध्यान किया है।
''स्वस्ति'' ने भक्ति में तेरा गुणगान किया है।।13।।

दोहा

तन से तप को नित करें, करें भक्ति गुणगान।
मुनिसुब्रत भगवान को, शत-शत बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

चहुँ गति से मुक्ति मिले, मिले ज्ञान और ध्यान।
सुख शांति समृद्धि हो, बारम्बार प्रणाम।।

।।इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

मिठाईयों में गूजा का,
सलाइयों में सूजा का,
मुनिसुब्रत भगवान की पूजा का
बड़ा ही महत्व है

अर्घ्यावली

श्री आदिनाथ अर्घ्य

चिंतन में रहना, यही है कहना, सार्थक जीवन हो जाये।
पूजा प्रभु तेरी, कटेगी बेड़ी, अर्घ्य चरण में ले आये ।।
हे आदि जिनेश्वर, भक्त के ईश्वर, आकर धीर बंधा देना।
संसार न भटकूँ, जग न अटकूँ, मेरे कष्ट को हर लेना।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ अर्घ्य

बाधाओं का पथ मिला मुझे, प्रभु तुम तक पहुंच न पाता हूँ।
जग की झंझट उलझाती है, हर पीड़ा को सह जाता हूँ।।
पाऊँ अनर्घ्य पद हे प्रभुवर, अर्घ्यों का थाल मैं ले आया।
सच्ची श्रद्धा सम्यग्दर्शन, पाने को यह मन ललचाया ।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ अर्घ्य

(तर्ज : नरेन्द्रं-फणीन्द्रं...)

सभी दर मैं घूमा, नहीं है ठिकाना।
चढ़ा अर्घ्य चरणों, मैं मुक्ति में जाना।।
करो शान्ति देवा, हरो दुख हमारे।
हम आये प्रभो जी, शरण तुम्हारे।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ अर्घ्य

मुनिसुव्रत प्रभु का आराधन, मुक्ति का साधन बन जाता।
क्षण भंगुर संसारी दुखमय, कष्टों का जाल भी कट जाता ।।
हे मुनिसुव्रत प्रभु मनहारी, तव चरण पूजने आया हूँ।
यह हीरा जन्म सुधर जाये, यह अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं भूगर्भ से प्रगटित जहाजपुर स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ अर्घ्य

ये आठ द्रव्य और आठ कर्म, चरणों में प्रभुवर लाया हूँ।
इक बार नजर कर दो मुझ पर, यह भाव संजोकर लाया हूँ।।
हे पार्श्वनाथ भगवान मेरे, उपसर्ग सहन कर मोक्ष लिया।
मुझ को भी ऐसी शक्ति दो, भटके न भव भव मेरा जिया ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य

हे वीर प्रभो महावीर प्रभो, अति वीर तुम्ही हो वर्द्धमान।
सन्मति मति मेरी शुद्ध करो, हम भक्तों के हो भाग्यवान ।।
अंतिम तीर्थंकर महावीर, यह अर्घ्य पूजा को लाये हैं।
मिथ्या जंजाल को तज करके, तुम सम बनने को आये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सरस्वती अर्घ्य

मन की चंचलता, कार्य विफलता, बिना ज्ञान के होती है।
सद्गुण का अर्घ्य, बना के वर्ग, बीज धर्म का बोती है।।
जिनवर की वाणी, जग कल्याणी, दिव्य ध्वनि अमृत बरसे ।
मन शुद्ध कराओ, ज्ञान सिखाओ, सरस्वती जी मन हरषे ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री समुच्चय चौबीसी अर्घ्य

आठों कर्मो का जाल बना, मकड़ी सम उसमें फंसता हूँ।
देख दूसरों के कष्टों को, नाथ सदा मैं हंसता हूँ।।
चौबीसौं तीर्थंकर प्रभु ने, जीवन को अपने धन्य किया।
हम अर्घ्य से पूजा करते हैं, भावों से हमने ध्याय लिया।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्र अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य शांतिसागर छाणी परम्परा अर्घ्य

आचार्य शांतिसागर छाणी ने, दीक्षा स्वयं ही लेकर के ।
धर्म ध्वजा लहराई जग में, शिष्य को दीक्षा दे करके ।।
सूर्यसागरजी विजयसागरजी, विमलसागर ने पद पाया ।
सुमतिसागर सन्मतिसागर ने, धर्म दीप को प्रजलाया ।।
ज्ञान ज्ञेय ने ज्ञान की महिमा, सारे जग को बतलाई ।
श्रद्धा भक्ति से अर्घ्य चढ़ाए, तन मन शांति हो जाई ।।

ॐ ह्रीं प्रथमाचार्य शान्तिसागर छाणी परम्परायाम आचार्य सूर्यसागर विजय सागर विमल सागर सुमति सागर विद्याभूषण सन्मति सागर ज्ञान सागर ज्ञेयसागरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

गीता छंद

अरिहंत सिद्धाचार्य पूजूँ, ज्ञानी श्रुत सुमिरण करूँ।
श्री मुनिवरों के चरण पूजूँ, वाणी माँ हृदय धरूँ।।
षोडश रत्नत्रय धर्म पूजूँ, आत्महित संयम धरूँ।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, जिन प्रभु वंदन करूँ।।
जिन चैत्य चैत्यालय दरशकर, भावना शुभ भाऊँगा।
श्री मेरु नंदीश्वर जिनालय, वंदना को जाऊँगा।।
सब तीर्थ, क्षेत्र अतिशयों को, देव नर पूजें सदा।
कैलाश गिरि सम्मेद की, नित प्रातः भक्ति हो सदा।।
चंपापुरी-पावापुरी, श्री सिद्ध क्षेत्रों को नमन्।
चौबीस श्री जिनराज की, भक्ति से खिलता है चमन।।

दोहा

अष्ट द्रव्य थाली सजा, प्रभु पूजन को आय।
सहस्त्र नाम वाले प्रभु, चरणों अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दश धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्योः, पंचमेरु संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, नंदीश्वर द्वीप संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ

श्री चंद्र सम हे शांति प्रभु जी, आऊँ अब शरणा तेरे।
हम शील गुणव्रत धार लें औ, दोष सब जग के हरें।।
सुर देव नर पूजें सदा, श्री शान्ति हित ध्याते उन्हें।
चौंतीस अतिशय युक्त हैं, सुख भव्यजन पाते जिन्हें।।
परम शान्ति अनूप आनन्द, ध्यान में तल्लीन हैं।
पाई जिससे सिद्धि तुमने, वह रत्नत्रय तीन हैं।।
सम्पूर्ण प्राणी मात्र को, और ध्यानी को सुख सम्पदा।
राजा प्रजा अरु सर्वजन को, कष्ट ना होवे कदा।।
होवे सुवृष्टि कुदृष्टि खोवे, व्याधि सब की दूर हों।
त्रैलोक्य नाथ की भक्ति से, हृदय सदा भरपूर हो।।
झूठ हिंसा क्रोध कर्मों से किया, तन मन मलिन।
सत्य संयम ध्यान कर, खिल जावे भव्यों का सुमन।।
दुष्कृत्य और दुष्काल सब, प्रभु पास न आवें कभी।
पा नेह दृष्टि तेरी प्रभु जी, स्वस्थ जन होवें सभी।।

दोहा

चहुँ कर्मों को नष्ट कर, लिया है केवलज्ञान।
तीन लोक में शान्ति हो, त्रिलोकी भगवान।।

गीतिका छंद

हृदय कमल हो ज्ञान लक्ष्मी, पाऊँ फिर परमात्मा।
गुण अनंतानंत धारूँ, ध्याऊँ सदा निज आत्मा।।
वाणी हित-मित नित उचारें, चतुर्विधि सेवा करें।
श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र मेरे, अष्ट कर्मों को हरें।।
तव चरण हो मम हृदय में, हृदय चरणों में रहे।
श्री तरण तारण भव निवारण, त्याग कर मुक्ति गहे।।

पूजन करी प्रभु आपकी, यदि हो गई गलती कहीं।
अज्ञान और प्रमाद वश, मैंने उसे जाना नहीं।।
क्षमा करना, क्षमा करना, क्षमा करना नाथ जी।
शेष जीवन जो है मेरा, तव चरण हो साथ जी।।
कर्म क्षय हो बोधि पाऊँ, गमन हो सुगति जी।
अंत समय समाधि पाऊँ, ध्यान हो तुम चरण जी।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

।। नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें।।

विसर्जन

गीतिका छंद

जानकर अन्जाने में प्रभु, हो गई जो गलतियाँ।
प्रायश्चित दे क्षमा करना, शुद्ध हो मेरा जिया।।
मन्त्र पूजन ज्ञान ध्यान, शुभाचरण से हीन हूँ।
बुद्धि मेरी शुद्ध होवे, प्रभु चरण में लीन हूँ।।
नित्य पूजा भक्ति से, आराधना मैं नित करूँ।
सर्व दोषों का हरण कर, कर्म को नित परिहरूँ।।
मेरी पूजा भक्ति में, आये यहाँ जो देव गण।
मैं करूँ उनका विसर्जन, और प्रभु चरणों नमन।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

वृहद मुनिसुव्रतनाथ स्त्रोत
रचना काल - 22 मार्च 2020

(दोहा)

निकले थे भूगर्भ से, मन्दिर बना जहाज।
भक्त वंदना कर रहे, मुनिसुव्रत जिनराज।।
श्वांस के सातो स्वर जपे, सदा तुम्हारा नाम।
मुनिसुव्रत भगवान को, शत्-शत् बार प्रणाम।।

शंभू छंद - तर्ज (भला किसी का...)

मुनिसुव्रत जिनवर की भक्ति, गाने भक्त ये आया है।
जबसे दर्शन किये आपके, तेरा रूप सुहाया है।।
बीसवें तीर्थंकर कहलाये, कछुआ चिन्ह बताया है।
तुम्हें समर्पित हर कण हर क्षण, भाव से शीश झुकाया है।।1।।

सूर्य तिमिर को हर लेता है, भक्ति तेरी कर्म हरे।
परम प्रभावी, आत्म स्वभावी, गुण ही गुण से आप भरे ।।
जब तेरे दर्शन को कीना, पलक झपकना भूल गया।
रोम-रोम पुलकित हुये मेरे, मेरा मन तो हरा गया।।2।।

हे! जग भूषण स्तुति तेरी, गाने में उत्साह बढ़ा।
गुण अनन्त मैं हूँ अज्ञानी, क्या गाऊँ यह सोच रहा।।
नैनो से भक्ति जलधारा, अविरल बह यह कहती है।
आप बिना ना जलती ज्योति, मिले ना धर्म के मोती है।।3।।

धरा में शुभ परमाणु जितने, तुम तन का निर्माण हुआ।
सुन्दर रूप सलौना मुखड़ा, चित्त को सबके चुरा लिया।।
उपमा किससे करे आपकी, कोई नजर ना आता है।
अद्वितीय हो अनुमप जग में, दर्श से मन खिल जाता है।।4।।

है प्रभाव तेरा प्रभु जग में, खिंच खिंच भक्त ये आते है।
जो परमात्मा को न मानें, वो भी भक्ति गाते है।।

मुख मुरझाया दुखी है मन से, ऐसा भक्त शरण आये।
बरसाते हो कृपा सभी पर, हो प्रसन्न वापस जाये।।5।।

मुस्काता मुख मंड़ल तेरा, भक्त उदासी हर लेता।
हृदय कमल सा खिल जाता है, दर्श जो तेरे कर लेता।।
विश्व विधायक करूणा सिंधु, मुख इन्दु सा लगता है।
छाया जिस पर रहे तुम्हारी, दुख बिन्दु सा लगता है।।6।।

शांतिवन के स्वामी हो तुम, परम शांत है रूप तेरा।
मन चंचल है, औ अशांत है, शांत करो प्रभु मन मेरा।।
देख आपको ज्ञात हुआ प्रभु, आत्म ध्यान सबसे उत्तम।
जग की माया मोह को तजकर, आप बने प्रभु सर्वोत्तम।।7।।

राजगृही में बजी बधाई, जन्म नाथ ने पाया है।
सौधर्म इन्द्र ऐरावत लेकर, स्वर्ग धरती पर लाया है।।
अद्‌भुत रूप देखने प्रभु का, नेत्र हजार बनाया है।
फिर भी तृप्ति हुई न उसकी, पांडुक न्हवन कराया है।।8।।

गगन में तारे जितने उतने, जग में खुशी के दीप जले।
स्वर्ग धरा पर बाजे जितने, उतने बाजें स्वयं बजे।।
हर मन खुशी से नाचे झूमे, मुनिसुव्रत का जन्म हुआ।
हर गोदी स्वागत करती थी, मां पद्‌मा का हर्षे जिया।।9।।

श्री सम्मेद शिखर पर्वत पर, जाकर के निर्वाण लिया।
कूट निर्जरा पाये प्रसिद्धि, हमने भी जा दर्श किया।।
सिद्ध शिला के वासी बन गये, वापस कभी न आयेंगे।
हम भी भक्ति करें आपकी, कभी मोक्ष तो पायेंगें ।।10।।

जहाजपुर में अतिशय कीना, धरती से प्रभु प्रगट हुये।
बरसाये अतिशय भक्तों पर, भक्त ने आकर चरण छुये।।
मंगल को वीर जयंती, आये है मंगल करने।
जंगल में हो गया है मंगल, भक्तों को भव से तरने।।11।।

पांच वर्ष में अतिशय क्षेत्र तो, बनकर हुआ है पूर्ण तैयार
मुनिसुव्रत प्रभु का है अतिशय, ऐसे प्रभु को नित्य निहार।।
बीसवें तीर्थंकर सुव्रत का, सुन्दर मन्दिर बना जहाज।
बीस बीस सन् पाये प्रसिद्धि, पंचकल्याणक हुये महान ।।12।।

चार रंग परिर्वतन कीने, नीला कृष्ण स्लेटी हरा।
भाग्य हो भक्तों का परिवर्तन, भक्त भाव से हरा भरा।।
आया प्रशासन ले जाने को, भारी वजन बढ़ाया है।
भक्त हाथ में हल्के हो गये, अतिशय नया दिखाया है।।13।।

स्वस्तिधाम में लाने को तो, पांच भक्त ने उठा लिया।
पर जब वेदी पर बैठाये, वजन दुबारा बढ़ा लिया।।
स्वस्ति भूषण जैसे आई, हल्का वजन को कीना था।
भक्त की भक्ति को प्रभुवर ने, शुभ सम्मान है दीना था।।14।।

सूनी गोदी भरी भक्त की, तन के रोग भी हरते हो।
तन मन धन की शांति देकर, भक्त की झोली भरते हो।।
मानस पट पर तुम्हें बिठाकर, मन को मन्दिर बना लिया।
मेरी आंख के ज्योति पुंज हो, हृदय में तुमको बिठा लिया ।।15।।

चौपाई (तर्ज - चालीसा)

धन कुबेर धरती पर आये, समवशरण रचना करवाये।
समवशरण में आप विराजे, शोभा आपकी अद्भुत साजे।।
तरू अशोक भी शोक भगाये, वैभव महिमा को दर्शाये।
रूप आपका मनहारी है, अद्भुत शोभा भी न्यारी है।।16।।

आत्म ध्यान का आसन पाये, पर सिंहासन सुर ले आये।
चतु अंगुल ऊपर ही रहते, वीतराग के झरने बहते।।
गर्मी तन को जरा न लगती, समवशरण में महिमा दिखती।
चौसठ चँवर सदा ही दुरते, इन्द्र सभी, सेवा में रहते।।17।।

तीन छत्र ये महिमा गायें, तीन लोक के नाथ कहाये।
हमें अपनी छाया में रखना, कर्म धूप से हमें है बचना।।
दुंदुभि सुयश आपका गाये, वीतराग संदेश सुनाये।
भव्य प्राणी को पास बुलाये, परमेश्वर के दर्श कराये।।18।।

मंद-मंद गंधोदक वृष्टि, पुष्प गिराये सारी सृष्टि।
पवन के मीठे झौंके आये, प्रभु की महिमा को बरसाये।।
भामण्डल का तेज निराला, सूर्य चांद फीका कर डाला।
सूर्य सा तेज चांद सी ठण्डक, कर्म लगाये आकर दण्डक।।19।।

स्वर्ग मोक्ष का पथ दिखलाये, सुख अनंत की राह दिखाये।
तत्वों का भी ज्ञान करायें, दिव्य ध्वनि अमृत बरसाये।।
प्रभु चरण जहाँ पे धरते है, स्वर्ण कमल वहाँ पे रचते है।
करें देवता अतिशय आकर, सुर प्रसन्न प्रभु सेवा पाकर ।।20।।

(दोहा)

चुन चुन एकत्रित किये, भाव पुष्प मनहार।
स्वीकारों हे नाथ जिन, करता हूँ मनुहार।।21।।
माथ चढ़ाऊँ चरण रज, मिले ज्ञान आलोक।
अंतर्मन में तुम बसे, यही मेरा ध्रुव लोक।।22।।
तुम चुंबक मैं लोह कण, खिंचा आया तेरी ओर।
जबसे तुमको देखा है, नाचे मन का मोर।।23।।

शंभू छंद (तर्ज - भला किसी का कर...)

कर्म युद्ध के आप विजेता, कर्मो से मैं हार गया।
निर्बल के सम्बल हैं प्रभुवर, सब कर्मों का भार गया।।
निर्विकार निष्काम निरामय, चहुँ ओर है तेरा प्रताप।
दौड़-दौड़ सब भक्त है आते, मिटता है उनका संताप।।24।।
लक्ष्मी तेरे चरण की दासी, साथ तेरे ही रहती है।
जो करता भक्ति प्रभु तेरी, किरपा उसपे बरसती है।।
कल्पवृक्ष सम नाम आपका, लेकर आगे बढ़ता है।
शक्ति, हिम्मत आती उसको सफल सीढ़ियां चढ़ता है ।।25।।
जगत विवाद है घेरे मुझको, निकल नहीं हम पाते है।
न्यायाधीश तुम्हीं हो मेरे, क्यों ना मुझे बचाते हो।।
सत्य राह का राही हूँ प्रभु, रक्षा आपको करनी है।
संकट दुख परेशानी पीड़ा, प्रभु जी आपको हरनी है।।26।।
मुनिसुव्रत के चरण छांव में, स्वर्ग सा अनुभव होता है।
चित्त हो स्थिर चिंतन मेरा, मन आनंदित होता है।।
मंद बुद्धि औ मंद भाग्य पर, करूणा अपनी बरसाओं।
जो भी मन से ध्याये उसको, प्रेम आंगन में बैठाओ।।27।।

जो है सच्चा भक्त तुम्हारा, उसी हाथ मैं बिकता हूं।
जहाँ पे तेरी चर्चा होती, वहीं पे जाके टिकता हूं।।
जो हैं तेरे भक्त प्रभुजी, उनसे रिश्ता रखता हूं।
जिसमें तेरा गुण वर्णन हो, गीत वही मैं लिखता हूँ।। 28।।

मुझे भरोसा है प्रभु तुम पर, सच्चा साथ निभाओगे।
पल-पल मेरी रक्षा करके, सत्पथ पर ले जाओगे।।
इसलिए तो हृदय में मैंने, तुमको नाथ बिठाया है।
निकट आपके मैं नित बैठू, अपना तुम्हें बनाया है ।।29।।

तेरी थोड़ी सी भक्ति ने, सुख अनंत मुझको दीना।
सच्ची शरण तुम्हारी भगवन, समझ आज मैंने लीना।।
तुम ही मंगल, तुम ही उत्तम, तुम ही सच्ची शरणा हो।
वे ही शरण तुम्हारी आते, चाहते दुख से बचना जो ।।30।।

झर-झर करूणा झरती आप में, भक्त सामने जो आता।
श्रद्धा भक्ति भजन जो करता, बिन बोले वो सब पाता।।
जितना समय तेरे चरणों में, बीता वह तो सफल हुआ।
बाकी समय तो क्रोध कषायें, करके मैं तो विफल हुआ।।31।।

इतने अच्छे लगते मुझको, जग में कोई न लगता है।
मन की बात मैं सब कुछ कह दूँ, जग में कोई न सुनता है।।
बिना बोले तुम उत्तर देते, मैं तो हृदय से सुनता हूँ।
नयन बंद कर भी तुम दिखते, ज्ञान से तुमको लखता हूं।।32।।

बिना कृपा तेरी कोई भगवन, द्वार न तेरे आ सकता।
मुझ पर कृपा हुई प्रभु तेरी, चारू छवि तेरी लखता।।
जो कुछ पाया आप कृपा है, बिना कृपा ना मिल सकता।
पुण्य योग से आप मिल गये, अब न कोई आवश्यकता।।33।।

कलयुग में प्रभु भू से निकले, सत्पथ हमें दिखाने को।
पाप छोड़ तज धर्म में जागो, मुक्ति राह बताने को।।
नहीं चाहना, नहीं कामना, शरण में तेरे बस जाऊँ।
नजर न हटती, पलक न झपकें, बस दर्शन तेरे पाऊँ ।।34।।

मन मैला है बड़ा विषैला, मुझको नाथ सम्हालो तो।
सिद्धालय में आप विराजे, मुझको नाथ बुला लो तो।।

अद्भुत अनुपम रूप आपका, भँवरे सा मन रहता है।
तेरी गुण बगिया में रहना, मुझको अच्छा लगता है ।।35।।
तेरी शरणा हम बैठे प्रभु, नाथ दुखों को दूर करो।
बाहर कर्म सताये भगवन, दुष्कर्मों को आप हरो।।
पुण्य कथा से पाप है कटते, जैसे रवि से कमल खिले।
मैं हूँ सच्चा भक्त तुम्हारा, हृदय पटल में आप मिले।।36।।
मात-पिता अपने बच्चों के, दुख को सदा ही हैं हरते।
मात-पिता तुम ही प्रभु मेरे, क्यों ना मेरे दुख हरते।।
माँ की गोद में बाल सुरक्षित, चरण में तेरे मैं रक्षित।
रक्षा कवच नाम है तेरा, तेरे बिन मन है शंकित।।37।।
भक्त को भगवन आप बनाते, सुना है ये मैंने भगवन।
गुणमणि निधियाँ भर भर देते, देखा है मैंने भगवन।।
मैं इस योग्य नहीं क्या प्रभुजी, जो मुझको अभी नहीं दिया।
योग्य बनाकर गुण निधियाँ दो, शरण आपने मुझे लिया।।38।।
पूर्णमासी के चाँद हो प्रभुजी, मैं हूँ अमावस सी तिथियाँ।
राहु कर्म को दूर हटाने, की बताओ मुझको विधियाँ।।
भक्त हूँ तेरा प्रभो जानती, है ये तो सारी दुनिया।
भला जो होगा यदि मेरा तो, नाम तेरा लेगी दुनिया।।39।।
सदा मिले सान्निध्य आपका, मन में भाव ये रहता है।
बिना दर्श के बिना ध्यान के, मन अशांत दुख पाता है।।
पुण्य सीढ़ी से चढ़कर भगवन, द्वार तुम्हारे आया हूँ।
भक्ति रीत न जानूँ भगवन, वही सीखने आया हूँ।।40।।
ये संसार भयानक जंगल, भय ना मुझको सता रहा।
क्योंकि प्रभो है साथ में मेरे, मेरा मन यह बता रहा।।
जन्म-जन्म में भक्त बनूँ मैं, जब तक मुझे ना मोक्ष मिले।
जन्म-जन्म मैं करूँ तपस्या, इससे ज्ञान उद्यान खिले।।41।।
आँख धन्य हुई दर्श से तेरे, वचनों से गुणगान किया।
पैर धन्य है दर पर आकर, हाथ से माला जाप किया।।
हृदय धन्य है हृदय में प्रभुजी, तुम ही आकर बसते हो।
जीवन धन्य तुम्हें पाकर के, हर क्षण तुम ही दिखते हो।।42।।

जब-जब तेरी भक्ति करता, निकट में तुमको पाया है।
जब-जब तेरा ध्यान लगाया, आनंद रस बरसाया है।।
तेरी निकटता अति सुखदायी, दूर न जाना चाहूँ मैं ।
खो जाऊँ मैं आप ध्यान में, यही भावना भाऊँ मैं।।43।।

अब तक समय गँवाया मैंने, कर्मों के वशीभूत रहा।
डोर मेरी अब आप संभालो, भक्त हृदय यह चाह रहा।।
अपनी ओर में खींचो मुझको, इस जग से मैं दुखी हुआ।
सच्चा पथ है आत्म ध्यान का, तुम्हें देख यह भान हुआ।।44।।

अभिमान में मैं अपने को, सदा बड़ा माना करता।
तेरी प्रभुता वैभव से प्रभु, मेरा मान हरा करता।।
परम श्रेष्ठ हो परम ज्येष्ठ हो, मैं पामर हूँ अज्ञानी।
नाथ बुराईयों का पतझड़ कर, मुझे बनाओ अब ज्ञानी।।45।।

गल्ती मैंने अब तक जो की, क्षमा आपसे माँग रहा।
फल दुख उनका मैंने पाया, सत्य आपको बता रहा।।
सभी जीव से क्षमा माँगता, जिस-जिस को दुख दीना है।
क्षमा करो प्रभु दया करो, उर क्षमा भाव धर लीना है।।46।।

तेरी प्रभुता लख निज लघुता, आज समझ में आयी है।
जिसे इकट्ठा कर बड़ा बनता, वह तो बस परछाई है।।
प्रभु आपके दर्श से जाना, आत्म निधि ही सच्ची है।
भक्ति का फल हो विरागता, आत्म विधि ही अच्छी है।।47।।

उत्तम प्रभु की उत्तम भाव से, उत्तम भक्ति गाई है।
उत्तम फल मुक्ति मिल जाये, उत्तम तुम्ही सहाई है।।
धर्म धैर्य के साथ चलूँ मैं, शक्ति इतनी दे देना।
'स्वस्ति' भक्ति कर हर्षायें, भक्त हृदय में तुम रहना।।48।।

(दोहा)

जहाजपुर के जहाज मन्दिर, में बैठे भगवान।
मुनिसुव्रत प्रभु चरण में, बार बार प्रणाम।।
भाव सरोवर उमड़ पड़ा, तभी बना यह पाठ।
भक्ति से पढ़ना इसे, नित्य झुका के माथ।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा
(स्वस्ति धाम तीर्थक्षेत्र)

दोहा

पंच परम परमेष्ठी का, मन से करता ध्यान।
जिनवाणी जिनमात को, शत् शत् करूँ प्रणाम।।
मुनिसुव्रत भगवान की, महिमा अपरंपार।
अतिशय कारी नाथ को, प्रणमूँ बारंबार।।

चौपाई

मुनिसुव्रत प्रभु का जयकारा, जय-जय का लगता है नारा।
मुनिसुव्रत प्रभु नाम निराला, आतम में करता उजियाला।।
भक्ति भाव से पूजूँ चरणा, अर्ज करूँ मैं कर्म को हरना।
मां पदमा ने जन्म दिया है, पिता सुमित्र ने लाड़ किया है।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष है, भक्त को धर्म का यही वृक्ष है।
कल्याणक कल्याण कराये, निज कल्याण के भाव बनाये।।
गर्भ कल्याणक रत्न हैं बरसे, जन्म कल्याणक जन-जन हरषे।
तप कल्याणक मुनि बनाये, ज्ञान कल्याणक ज्ञान को पाये।।
केवलज्ञान हुआ उजियाला, हम अरिहंत की फेरे माला।
ज्ञान अनंत शक्ति के धारी, कर्म शक्तियाँ तुमसे हारी।।
पूजा भक्ति तेरी गाऊँ, पाप नाशने शक्ति पाऊँ।
पाप बोझ से दबे हुए हम, कर्म भार से लदे हुये हम।।
माया मोह का फैला दलदल, कष्टों के मंडराये बादल।
भक्तों की पीड़ाये हर दो, निज आतम शुद्धि का वर दो।।
कृपा करो तुम करुणा सागर, सुख से भक्त की भर दो गागर।
वीर जयंति शुभ दिन आया, प्रगटे भू से दर्शन पाया।।
ठेले पर जैसे ही बिठाया, हल्का अपना वजन कराया।
शासन ले जाने को चाहा, हिले न तुम अतिशय दिखलाया।।

देवी अपराजिता संग में आई, खुशियाँ चहुं दिश में हैं छाई।
प्रतिमा महामनोहर सुंदर, दर्शन से मन होता अंदर।।
भक्त एकटक तुम्हें निहारे, बार-बार आने को विचारे।
वर्षायोग कलश स्थापन, नाभि निकट हुआ स्पंदन।।
चार बार हुआ रंग परिवर्तन, भक्त भक्ति में करते नर्तन।
चौदह सन् छब्बीस जुलाई, शनि अमावस अतिशय भाई।।
दिव्य रोशनी आंख से निकली, संग अभिषेक की धारा बहती।
दर्शन को लग गया था मेला, घंटो अतिशयकारी बेला।।
दौड़-दौड़ कर भक्त है आते, मनवांछाये पूर्ण कराते।
खारा पानी मधुर कराया, निराधार को दे दी छाया।।
गोदी सूनी भरी भक्त की, मानव मात्र की प्यास तृप्त की।
मुक्ति प्रदायक पथ दर्शायक, भक्तों को हो ध्याने लायक।।
नई दिशा नई राह दिखाओ, भक्ति ज्ञान का दीप जलाओ।
भाग्य जगा दो भाव जगा दो, दुष्ट कर्म को आप भगा दो।।
कुछ अतिशय हम पर बरसादो, अंतरमुख मन मेरा करा दो।
श्री सम्मेद से मुक्ति पाई, जहाजपुर महिमा दिखलाई।।
कर्म नाश निर्वाण को पाया, पाने को मैं शरण में आया।
शनिग्रह बाधा दूर भगाओ, भक्तों के संकट विनशाओ।।
हम भी भक्त तुम्हारे स्वामी, तुम हो सबके अंतरयामी।
दिल में हो तस्वीर तुम्हारी, संवरेगी तकदीर हमारी।।
अंतिम भाव है यही हमारे, होय समाधि तेरे द्वारे।
भाव शुद्ध मन मंगलमय हो, सारा जीवन धर्ममय हो।।

दोहा

चालीस दिन तक चालीस बार, पढ़ते जो भविमान।
बुद्धि शुद्ध धन हो अतुल, होवे सम्यग्ज्ञान।।
मुनिसुव्रत भगवान की, भक्ति करें अपार।
'स्वस्ति' भक्ति भाव से, प्रणमूँ बारंबार।।

जाप्य - ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः

श्री मुनिसुव्रतनाथ स्तोत्र
(स्वस्ति धाम तीर्थक्षेत्र)

(तर्ज-नरेन्द्र फणीन्द्र.....)

छंद-भुजंग प्रयात्

नरेन्द्रं सुरेन्द्रं करें पूजा तेरी, झुका सिर करूँ अर्चना मैं घनेरी।
छवि वीतरागी है त्यागी बनाये, मनोहारी मुद्रा है मन को लुभाये।।
मुनिनाथ हो तुम सुव्रत को दिलाते, सदा संकटो को तुम्ही तो हटाते।
दुःखियों के दुःख को सदा हरने वाला, सुखिया भी सुख में जपे तेरी माला।।

है छाया अंधेरा न सूझे किनारा, बड़ी दूर मंजिल, दो प्रभु जी सहारा।
जपूँ तेरी माला, पुकारूँ मैं तुझको, दुःखो में फंसा हूँ, सम्भालो जी मुझको।।
मेरी क्रोध अग्नि, क्षमा जल को डालो, अभिमान पत्थर को आपहि निकालो।
माया की छाया, करो दूर मेरी, हरो लोभ मेरा, करो नाहिं देरी।।

करें भक्ति तेरी तो बीमारी जावे, कभी भूत-प्रेत न उनको सतावे।
तेरी भक्ति से शक्ति तन-मन की बढ़ती, करें शांतिधारा, ना विपदायें चढ़ती।।
खारा था जल तूने मीठा कराया, सूनी थी गोदी तो पुत्र को पाया।
नहीं सिर पे छाया है, छाया कराई, मनोकामना पूर्ण तूने कराई।।

तुम्ही मां पितु हो, तुम्ही मित्र मेरे, हो भाग्य विधाता, शरण में हूँ तेरे।
तुम्ही रक्षा करना, तुम्ही हो सहारे, भंवर में है नैया, करो तुम किनारे।।
श्रद्धा के पुष्पों से जो तुमको ध्यावें, महासंपदा का तू मालिक बनावे।
सुबह शाम गीतों की माला बनाऊँ, तेरी भक्ति गा के मैं तुझको सुनाऊँ।।

दोहा

द्वारे भक्त है आ खड़ा, शरण में ले लो देव।
मुनिसुव्रत भगवान की, नित प्रति करते सेव।।

श्री सरस्वती चालीसा

दोहा

श्री अरिहंत की वाणी ही, जिनवाणी कहलाये।
आचारज उवज्झाय जी, मुक्ति पथ बढ़ जाये।।
साधु ज्ञान चर्या करें, तप सिद्धि को पाय।
सरस्वती को भाव से, शत-शत शीश झुकाय।।

चौपाई

जय जय जय जिनवाणी माता, आपही सब को देती साता।
जिनवर मुख से जनम लिया है, आगम बनकर धन्य किया है।।
माता के सम रक्षा करती, कर्म कष्ट हर सुख को भरती।
दुर्गति में ना जाने देती, स्वर्ग मोक्ष पदवी को देती।।
जो है सच्चा भक्त तुम्हारा, जन्म जरा से हो छुटकारा।
सरस्वती की विनय जो करता, ज्ञान वृद्धि पुण्यों को भरता।।
सोलह नाम तुम्हारे गाये, विद्वानों ने हमें बताये।
सर्व प्रथम तुम हुई भारती, भक्त उतारें तेरी आरती।।
सरस्वती और मात शारदे, हंसगामिनी मुझे तार दे।
विदुषी कुमारी वागीश्वरी हो, ब्रह्मचारिणी जग माता हो।।
ब्रह्माणी और बाह्मणी कहते, वरदा वाणी जिन में रहते।
भाषा श्रुत देवी शुभ नामा, गौर निगद्यते करें प्रणामा।।
प्रातः उठ जो इनको पढ़ता, ज्ञान मार्ग में आगे बढ़ता।
सरस्वती को नमस्कार है, कार्य सिद्ध हो चमत्कार है।।
विद्या के आरम्भ में ध्याये, ज्ञान सिद्ध हो शीश नवाये।
नर सुरेन्द्र तुम महिमा गाये, सर्व साधु भी शीश झुकाये।।
जिनवर वाणी रक्षा करना, बुद्धि रोग को आपहि हरना।
पावन गंगा सम झरती हो, अमृत दे विष को हरती हो।।
हम अज्ञानी शरण में आये, हरो हमारी पूर्ण कषायें।
मिथ्यातम को मेरे नाशो, सम्यग्दर्शन ज्ञान प्रकाशो।।

जड़ चेतन का भेद करा दो, सूरज सम शुभ ज्ञान करा दो।
आतम अनुभव में आ जावे, जग संताप तुरत मिट जावे।।
मुक्ति का रास्ता दिखलाओ, जग से आपहि पार लगाओ।
जिनवर की हो तुम्ही दुलारी, भक्तों को प्राणों से प्यारी।।
ग्यारह अंग का ज्ञान समाहित, चौदह पूर्व करेंगे सब हित।
कृपा तुम्हारी जब हो जावे, दुर्बुद्धि में मति सु आवे।।
मिथ्या मोह अंधेरा छाया, तुमको ध्या आतम सुख पाया।
क्रोध मान माया भी जावे, वाणी का ना लोभ सतावे।।
हिंसा झूठ चोरी ना करता, बह्मचर्य शुभ मन से धरता।
राग द्वेष तज भाव सुधारे, आत्म ज्ञान निज रूप निहारे।।
अब तो मुझ पर कृपा करो माँ, अब तो मुझ पर दया करो माँ।
रत्नत्रय से पावन कर दो, सम्यग्दर्शन सावन कर दो।।
पंच परम परमेष्ठी ध्याऊँ, सब तीरथ को शीश झुकाऊँ।
ज्ञानी जन को करता वंदन, जीवन हो जायेगा चंदन।।
तीर्थंकर को शीश झुकाऊँ, जिनवाणी की शरण में आऊँ।
अब कर दो कल्याण हमारा, दे दो माता हमें सहारा।।
नेक राह पर सदा चलूँगा, सदा सदा गुणगान करूँगा।
जीवन में वो शांति आवे, जो मेरा अज्ञान मिटावे।।
सदा करूँ गुणगान तुम्हारा, हो जाये अज्ञान किनारा।
जनम-जनम ना छोड़ूँ नाता, बस तुमही को शीश झुकाता।।

दोहा

चालीसा को भाव से, नित पढ़ना भविमान।
बुद्धि शुद्धि होवे मेरी, बारम्बार प्रणाम।।
सरस्वती जिनमात का, 'स्वस्ति' करती ध्यान।
दुख संकट मेरे हरो, हो जावे कल्याण।।

सरस्वती मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं श्री वद् वद् वाद वादिनी नमः

आरती

तर्ज-वीर महावीरा स्वामी...

मुनिसुव्रत स्वामी मेरे, भक्ति करूँ चरण की तेरे,
हम सब उतारे तेरी आरती, ओ जिनवर हम सब....

भाव की कलियाँ श्रद्धा सुमन हैं, अर्पित चरणों तेरे,
हृदय में रहना, यही है कहना, जिनवर स्वामी मेरे। बाबा...
श्रद्धा के दीपक लाऊँ, भावों की ज्योति जलाऊँ।।
हम सब...............

पिता सुमित्र के राजदुलारे, पदमा माँ के जाये,
राजग्रही में जनम लिया है, जन-जन मंगल गाये। बाबा...
भक्तों ने कीनी सेवा, मुक्ति का पाया मेवा।।
हम सब...............

भूमि से तुम प्रगट हुये हो, दर्शन सबने पाया,
खुशियाँ तो हर दिल में छाई, जय-जय कार लगाया। बाबा...
चरणों की भक्ति चाहूँ, हृदय से तुमको ध्याऊँ।।
हम सब...............

तेरे दर्शन करके प्रभुजी, ऐसा लगता मुझको,
हर इक पल मैं छवि निहारूँ, देखूँ हरदम तुझको। बाबा...
तेरी मूरत मनहारी, तेरा दर्शन सुखकारी।।
हम सब...............

!! इति श्री !!

आरती श्री आदिनाथ जी
रानीला जी

आदीश्वर बाबा मेरे, काटो सब कर्म के फेरे।
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा हम...।।

जन्म अयोध्या लेकर तुमने, षट् कर्मो उपदेश दिया।
ब्राह्मी सुन्दरी भरत बाहुबलि, मुक्ति पथ पर चला दिया।
स्वर्णो के दीप मैं लाऊँ, भावों को शुद्ध बनाऊँ।
हम सब उतारें ....। ओ बाबा हम...।।

आप अनंत चतुष्टय धारी, दर्शन सबने पाया।
दुखियों के तुम बने दयालु, शरण तिहारी आया।
संकट ने मुझको घेरा, करदो तुम ज्ञान सबेरा।
हम सब उतारें ....। ओ बाबा हम...।।

बड़ी दूर से आये बाबा, आरति करने तेरी।
कृपा दृष्टि अब मुझ पर कर दो, करो नहीं अब देरी।
मेरा अज्ञान मिटाओ, कर्मो को शीघ्र भगाओ।।
हम सब उतारें ....। ओ बाबा हम...।।

भारत में भारती का,
रथ में सारथी का,
भगवान की प्रतिदिन आरती का
बड़ा ही महत्व है

आरती श्री महावीर स्वामी जी

''पावापुर जी''

वीरा महावीरा स्वामी, मेटो दुख अंतरयामी।।
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा....

कुण्डलपुर के अवतारी हो, माता त्रिशला के नंदन।
भक्ति करते पूजा करते, मन हो जायेगा चंदन।।
भक्ति के भाव मैं लाऊँ, श्रद्धा से शीश झुकाऊँ।
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा....

तुम परमातम तुम अध्यातम, तुम हो अंतरयामी।
आत्मज्ञान की राह दिखा, चलना सिखलाया स्वामी।।
वंदन है तुमको मेरा, आशीष मैं पाऊँ तेरा।
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा....

सिद्ध क्षेत्र श्री पावापुर के, मध्य सरोवर आये।
आठ कर्म को नष्ट किया, निर्वाण तभी तुम पाये।।
सोना ना चांदी मांगूँ, हीरा न मोती माँगूँ।
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा....

आरती श्री मुनिसुव्रतनाथ जी

कंचन की थाली को सजाओ रे आज...
रतनो की थाल को भर लाओ रे आज...
आओ-आओ करें रे गुणगान, आरती भगवान की-2

पिता सुमित्र के राज दुलारे, मां पद्मा जी के नैनों के तारे
राजगृही में जन्म लियो आज-2
आओ-आओ करें रे गुणगान....

घी कपूर बाती से ज्योति को जलाके,
प्रभुवर के चरणों में शीश को नवाके
प्रभुवर की आरती में झूम-झूम के-2
आओ-आओ करें रे गुणगान....

सूरज और चंदा जिनके द्वारे पे आते,
सांझ और सवेरे जिनके लगते जयकारे
अतिशयकारी मेरे मुनिसुव्रतनाथ भगवान-2
आओ-आओ करें रे गुणगान....

मुनिसुव्रतनाथ भगवान की महिमा है न्यारी,
जगमग जलती रही बाती सारी
प्रभुवर की छवि को निहारो तुम आज-2
आओ-आओ करें रे गुणगान....

परम विदुषी लेखिका आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी द्वारा रचित कृतियां

श्री जिनपद पूजांजलि (विशेष कृति)

विधान संग्रह

1. श्री कल्पद्रुम विधान 2. श्री इन्द्रध्वज विधान 3. श्री सिद्धचक्र विधान 4. श्री सम्यक् विधान संग्रह 5. श्री मनुष्य लोक विधान 6. श्री श्रुत स्कन्ध विधान 7. श्री चौबीसी विधान 8. श्री नवग्रह शांति विधान 9. श्री कल्याण मंदिर विधान 10. श्री दशलक्षण विधान 11. श्री पंचमेरू विधान 12. श्री ऋषि मंडल विधान 13. श्री कर्म दहन विधान 14. श्री समवशरण विधान 15. श्री चौंसठ ऋद्धि विधान 16. श्री यॉग मंडल विधान 17. श्री पंच परमेष्ठी विधान 18. श्री पंचकल्याणक विधान 19. श्री वास्तु शुद्धि विधान 20. तीर्थंकर विधान संग्रह 21. श्री पंच बालयति विधान 22. श्री सम्मेद शिखर विधान 23. श्री सोनागिर विधान 24. श्री सिद्धक्षेत्र गिरनार विधान 25. श्री आदिनाथ विधान 26. श्री पद्मप्रभ विधान 27. श्री चन्द्रप्रभ विधान 28. श्री वासुपूज्य विधान 29. श्री विमलनाथ विधान 30. श्री शान्तिनाथ विधान 31. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान 32. श्री नेमिनाथ विधान 33. श्री पार्श्वनाथ विधान 34. श्री महावीर विधान 35. श्री जम्बू स्वामी विधान 36. श्री भक्तामर स्तोत्र विधान 37. श्री नन्दीश्वरद्वीप लघु विधान, 38. श्री रत्नत्रय विधान, 39. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग -1, 40. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग-2, 41. श्री चारित्र शुद्धि विधान 42. श्री संभवनाथ विधान, 43. श्री सोलहकारण विधान, 44. श्री सुमतिनाथ विधान, 45. श्री अभिनंदन नाथ विधान, 46. श्री कुन्थुनाथ विधान, 47. श्री अजितनाथ विधान, 48. श्री पद्मप्रभ शान्तिनाथ विधान

काव्य संग्रह

1. मेरी कलम से 2. भजन संग्रह 3. भजन सरिता 4. अमृत की बूंदे 5. श्री सम्मेद शिखर चालीसा 6. बड़ा ही महत्व है 7. आरती ही सारथी 8. जिन ज्ञान किरण 9. भक्ति संग्रह 10. काव्य वाटिका (भाग-1, 2) 11. श्री भक्तामर जी पाठ (हिन्दी) 12. प्रभु भक्ति की पोटली (चालीसा संग्रह) 13. भक्ति पुंज 14. आत्मा की आवाज 15. विनयांजलि 16. श्री सहसनाम स्तोत्र (हिन्दी रुपान्तरण) 17. पुण्य वर्धिनी 18. आचार्यों की प्रभु भक्ति (हिन्दी पद्यानुवाद) 19. भक्ति की संम्पदा (स्तोत्र संग्रह)

पूजन संग्रह

1. श्री सम्मेद शिखर टोंक पूजन 2. दीपावली पूजन 3. श्री आदिनाथ पूजन एवं चालीसा (रानीला) 4. श्री आदिनाथ पूजन अतिशय क्षेत्र (चाँदखेड़ी) 5. पद्म प्रभ पूजन (शाहपुर) 6. श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन संग्रह (सोनागिर जी) 7. श्री चन्द्र प्रभ पूजा (अतिशय क्षेत्र, तिजारा जी) 8. श्री चन्द्रप्रभ चौबीसी जिनालय पूजन (कैराना) 9. श्री वासुपूज्य जिन पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र चंपापुरजी) 10. श्री शांतिनाथ पूजन (सूर्य नगर) 11. श्री नेमीनाथ पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र गिरनार जी) 12. श्री पार्श्वनाथ पूजन एवं चालीसा 13. पार्श्वनाथ पूजन (जलालाबाद) 14. श्री पार्श्वनाथ, हांसी अतिशय क्षेत्र पूजन 15. अतिशय क्षेत्र बड़ागांव पूजा 16. श्री महावीर जिन पूजन संग्रह 17. स्वस्ति जिन अर्चना (सिद्ध क्षेत्र पावापुरजी) 18. श्री गोम्टेश्वर बाहुबली स्वामी विनयांजलि 19. कुंदकुंद स्वामी पूजा संग्रह, बारा (राजस्थान) 20. गुरू अर्चना (आ. 108 सन्मतिसागर जी) 21. श्री शांतिनाथ पूजा संग्रह (झालरापाटन) 22. श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन, भजन, चालीसा (जहाजपुर) 23. श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन एवं चालीसा (किरठल)

गद्य संग्रह

1. दीक्षा कठिन परीक्षा 2. जैन त्यौहार कैसे मनायें ? 3. प्रतिक्रमण (किये अपराध जो हमने) 4. स्वस्ति आत्म बोध 5. राग से वैराग्य की ओर 6. मुक्ति सोपान (धार्मिक सांप सीढ़ी) 7. श्री ऋषभदेव अनुशीलन 8. नानी की कहानी (भाग-1,2,3) 9. प्रभावना प्रवाह (भाग-1, 2) 10. आओ दीपावली पूजन करें 11. दीपावली कैसे मनायें। **12. टर्निंग पॉइण्ट (प्रवचन संग्रह)** 13. वीतरागी का आकर्षण 14. ऊँ नम: सबको क्षमा 15. आहार को समझे औषधि **16. स्मार्ट कौन 17. आप VIP है**